माँ शाकुम्भरी विश्वविद्यालय, सहारनपुर

हिंदी

स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम

कला विद्यापीठ – हिंदी

माँ शाकुम्भरी विश्वविद्यालय, सहारनपुर

व

संबद्ध महाविद्यालयों के हिंदी विभाग

हेतु

सत्र 2024–2025 से प्रभावी

पाठ्यक्रम समिति

(हिंदी)

क्रमांक	नाम	पदनाम	महाविद्यालय / विश्वविद्यालय	हस्ताक्षर
1	डॉ0 जया (संयोजक)	प्रोफेसर	एम0 एल0 एंड जे0 एन0 के0 गर्ल्स कॉलेज, सहारनपुर	
2	डॉ0 अर्चना धामा	प्रोफेसर	डी0 ए0 वी0 कॉलेज, मुजफ्फरनगर	
3	डॉ0 राम विनय शर्मा	प्रोफेसर	महाराज सिंह कॉलेज, सहारनपुर	
4	डॉ0 निकेता	प्रोफेसर	एस0 डी0 कॉलेज, मुजफ्फरनगर	
5	प्रो0 नवीन चंद्र लोहनी (वाह्य विशेषज्ञ)	संकायाध्यक्ष एवं अध्यक्ष हिंदी विभाग	चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ	
6	प्रो0 नरेश मिश्र (वाह्य विशेषज्ञ)	पूर्व आचार्य	एम0 डी0 विश्वविद्यालय, रोहतक	

Jaya

कला–विद्यापीठ (हिंदी)

माँ शाकुम्भरी विश्वविद्यालय, सहारनपुर

विद्यापीठ–दृष्टि

साहित्य मनुष्य को संवेदनशील बनाता है और संवेदनशीलता मनुष्य को समाज से अधिकाधिक उत्तरदायित्वपूर्ण ढंग से जुड़े रहने में सहायक होती है। साहित्य, मनुष्य को व्यष्टि से समष्टि की ओर ले जाता है।

विद्यापीठ–लक्ष्य

व्यक्ति को समाज के साथ जोड़ते हुए, उसके मन में समृद्ध पुरातन साहित्यिक विचार–धारा के वैभव के प्रति सम्मान का भाव जाग्रत करना। साथ ही वर्तमान वैश्वीकरण के दौर में बदलते परिवेश के विविध घटकों के महत्त्व को हृदयंगम करना भी अपरिहार्य है और इस लक्ष्य की पूर्ति करने का पूर्ण प्रयास किया गया है।

हिंदी–विद्यापीठ का परिचय

अन्य भाषाओं के समान हिंदी के भी दो रूप हैं– जन सामान्य की हिंदी व साहित्यिक हिंदी। किसी भी विषय का परिचय, ज्ञान प्राप्त करने के लिए माध्यम भाषा ही होती है। वह व्यक्ति को विषय से जोड़ने हेतु अपरिहार्य योजक है। तात्पर्य यह है कि साहित्य से इतर सोच रखने वाला व्यक्ति भी भाषा के बिना किसी विषय को भली भाँति नहीं सीख सकता। साहित्य को भी विविध कोणों से समझकर, विद्यार्थियों के समक्ष एक अन्य दुनिया के द्वार खुलेंगे। यद्यपि कुछ विचारों, सिद्धांतों, वादों से उसका सतही परिचय पूर्व में हो गया होगा तथापि अब उन्हें उनको समझने के लिए पर्याप्त धरातल उपलब्ध हो सकेगा। नई शिक्षा नीति–2020 के नियमानुसार स्नातक स्तर पर 2021–22 से पठन–पाठन आरम्भ हो चुका है स्नातक में साहित्य के प्रति नई दृष्टि का प्रसार स्नातकोत्तर–कक्षाओं तक भी करने का प्रयास किया गया है।

दृष्टि

- कला–विद्यापीठ (हिंदी) का पाठ्यक्रम जो कि विश्वविद्यालय परिसर व संबद्ध महाविद्यालयों हेतु है उसकी दृष्टि है– भाषा की सम्पन्नता व सबलता से परिचय करवाना। परिमार्जित भाषा, व्यक्तित्व को संवारती है, मेधा–सर्जन करती है। साथ ही साहित्य, मानव को और अधिक मानव बनाता है।
- साहित्य, मनोरंजन की वस्तु नहीं अपितु संवेदनाओं का संवर्धन करने का मंत्र है।
- भाषा, साहित्य का कलेवर है जो भावों, विचारों व ज्ञान का संवहन करती है। किसी भी देश के विकास में भाषा की अहम भूमिका रहती है।

लक्ष्य

- पाठ्यक्रम का लक्ष्य एक प्रभावपूर्ण व रोचक पठन–पाठन का वातावरण बनाना है।
- प्रतियोगी परीक्षाओं के दौर में विद्यार्थियों का पूरा ध्यान रखते हुए नये अध्यायों को जोड़ा गया है।
- नवीन पाठों को जोड़कर पंख दिए गए हैं परन्तु पुरातन पाठों की जड़ों से जुड़ाव को अनदेखा नहीं किया गया है।
- परियोजना, समूह चर्चा, नाट्य मंचन जैसी गतिविधियाँ विद्यार्थियों को सह अध्ययन का अवसर तो उपलब्ध कराएंगी ही साथ ही उन्हें उनकी प्रतिभा को माँजने का सुअवसर भी प्राप्त हो सकेगा।
- शिक्षा व अन्य विभागों से संबद्ध कई प्रतियोगिताओं में प्रतिभागिता करने वाले विद्यार्थी इस पाठ्यक्रम से लाभान्वित होंगे।

एम0 ए0 हिंदी पाठ्यक्रम

पूर्वापेक्षाएँ

इस पाठ्यक्रम का अध्ययन वही विद्यार्थी कर सकते हैं जिन्होंने बी0 ए0 में हिंदी का मुख्य विषय के रूप में अध्ययन किया हो।

पाठ्यक्रम–निष्कर्ष

1. हिंदी गद्य व पद्य का समेकित अध्ययन करवाना। आदिकाल से आधुनिक काल तक की विविध विचारधाराओं, परिस्थितियों व वादों से परिचय करवाना।
2. साहित्य के माध्यम से समाज व संस्कृति का अध्ययन करना।
3. सृजनात्मक लेखन के समानान्तर पत्रकारिता, कंप्यूटर व अनुवाद का महत्त्व समझाना।
4. साहित्य को प्रभावित करने वाले विविध विमर्शों को परखना।

5. साहित्य की पुरातन विधा नाटक से विद्यार्थियों का परिचय करवाना। रंगमंच तथा नाटक के माध्यम से व्यक्त जीवन की विसंगतियों व विद्रूपताओं को समझना।
6. कथा–साहित्य जो कि साहित्य की सर्वाधिक लोकप्रिय विधा है, उसका विस्तृत अध्ययन करना।
7. कथा व नाट्य साहित्य से इतर विधाओं का अपेक्षित अध्ययन व चिंतन।
8. भाषा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को विस्तार से समझना।
9. हिंदी के भाषिक स्वरूप का परिचय प्राप्त करना।
10. देवनागरी लिपि के वैशिष्ट्य, विकास व मानकीकरण का विवरणात्मक अध्ययन करना।
11. रचनाओं को समग्रता में जानने व परखने हेतु अपरिहार्य , संस्कृत व पाश्चात्य काव्यशास्त्रियों के सिद्धान्तों का अध्ययन करना।
12. प्राचीन से आधुनिक काल तक के कतिपय विशिष्ट रचनाकारों की रचनाओं का अध्ययन।
13. भूमंडलीकरण के दौर में लोकतंत्र के चौथे स्तंभ पत्रकारिता का विशद अध्ययन करना।
14. विज्ञान ने बौद्धिकता का विकास किया, फलस्वरूप साहित्य में परिवर्तित बिंबों, प्रतीकों व विषयों का समग्र चिंतन करना।
15. हिंदी से इतर भारतीय भाषाओं के साहित्य व साहित्यकारों का परिचय प्राप्त करना।
16. प्राचीन भाषाओं, प्रवासी हिंदी व क्षेत्रीय बोली (कौरवी) के साहित्य का चिंतन–मनन करना।
17. नेट/स्लेट जैसी प्रतियोगी परीक्षाओं हेतु विद्यार्थियों को सुदृढ़ आधारभूमि उपलब्ध करवाना।

पाठ्यक्रम एम0 ए0 (हिंदी)
(सत्र 2024–25 से प्रभावी)
(हिंदी में शोध सहित बी0 ए0) नई शिक्षा नीति 2020 के अनुसार)

वर्ष	सेमेस्टर	पाठ्यक्रम कोड	अनिवार्य/ चयनात्मक व मूल्यवर्धित	प्रश्न पत्र शीर्षक	लिखित/ प्रयोगात्मक/ परियोजना	क्रेडिट	आन्त0 परीक्षा अंक	वाह्य परीक्षा अंक (न्यूनतम अंक)	कुल अंक	न्यूनतम अंक (आंत0+वाह्य)	शैक्षणिक कालांश लिखित + ट्यूटेरियल	
न0 शि0 नी0 के अनुसार चतुर्थ वर्ष/वर्ष प्रथम	न0 शि0 नी0 के अनुसार सप्तम सेम0/सेमेस्टर प्रथम	0710101	अनिवार्य	हिंदी साहित्य का इतिहास	लिखित	4	25	75(25)	100	40	4×15=60	–
		0710102	अनिवार्य	प्राचीन एवं पूर्व मध्यकालीन काव्य	लिखित	4	25	75(25)	100	40	4×15=60	–
		0710103	अनिवार्य	नाटक और रंगमंच	लिखित	4	25	75(25)	100	40	4×15=60	–
		0710104	अनिवार्य	प्रयोजनमूलक हिंदी	लिखित	4	25	75(25)	100	40	4×15=60	–
			वैकल्पिक	(कोई एक विकल्प)								
		0710105		1 निबंध व व्यंग्य साहित्य	लिखित	4	25	75(25)	100	40	4×15=60	–
		0710106		2 वैचारिक पृष्ठभूमि व विमर्श	लिखित	4	25	75(25)	100	40	4×15=60	–
		0710107		3 संस्कृतिमूलक अध्ययन	लिखित	4	25	75(25)	100	40	4×15=60	–
		0710165		4 परियोजना	परियोजना	4			100	40	–	60
	न0 शि0 नी0 2020 के अनुसार अष्टम सेम0/सेम0 द्वितीय	0810101	अनिवार्य	उत्तर मध्यकालीन काव्य	लिखित	4	25	75(25)	100	40	4×15=60	–
		0810102	अनिवार्य	कथा साहित्य	लिखित	4	25	75(25)	100	40	4×15=60	–
		0810103	अनिवार्य	भाषा विज्ञान एवं हिंदी भाषा	लिखित	4	25	75(25)	100	40	4×15=60	–
		0810104	अनिवार्य	भारतीय साहित्य	लिखित	4	25	75(25)	100	40	4×15=60	–
			वैकल्पिक	(कोई एक विकल्प)								
		0810105		1 आत्मकथा व जीवनी साहित्य	लिखित	4	25	75(25)	100	40	4×15=60	–
		0810106		2 रेखाचित्र व संस्मरण साहित्य	लिखित	4	25	75(25)	100	40	4×15=60	–
		0810107		3 यात्रा वृत्तांत व रिपोर्ताज साहित्य	लिखित	4	25	75(25)	100	40	4×15=60	–
		0810165		परियोजना–द्वितीय	परियोजना	4	25	75(30)	100	40	–	60
				परियोजना प्रथम + परियोजना द्वितीय	मौखिकी	8	50	150(60)	200	80	–	120

3/1/2025

वर्ष	सेमेस्टर	पाठ्यक्रम कोड	अनिवार्य/ चयनात्मक व मूल्यवर्धित	प्रश्न पत्र शीर्षक	लिखित/ प्रयोगात्मक/ परियोजना	क्रेडिट	आन्त0 परीक्षा अंक	वाह्य परीक्षा अंक (न्यूनतम अंक)	कुल अंक	न्यूनतम अंक (आंत0+वाह्य)	शैक्षणिक कालांश लिखित + ट्यूटोरियल	
न0 शि0 नी0 2020 के अनुसार पंचम वर्ष/वर्ष द्वितीय	न0 शि0 नी0 के अनुसार नवम सेम0/सेमेस्टर तृतीय	0910101	अनिवार्य	आधुनिक काव्य (छायावाद पर्यंत)	लिखित	4	25	75(25)	100	40	4×15=60	–
		0910102	अनिवार्य	भारतीय काव्यशास्त्र	लिखित	4	25	75(25)	100	40	4×15=60	–
		0910103	अनिवार्य	मीडिया लेखन व व्यावहारिक पत्रकारिता	लिखित	4	25	75(25)	100	40	4×15=60	–
			वैकल्पिक	(कोई एक विकल्प)								
		0910104		1 कबीरदास	लिखित	4	25	75(25)	100	40	4×15=60	–
		0910105		2 सूरदास	लिखित	4	25	75(25)	100	40	4×15=60	–
		0910106		3 तुलसीदास	लिखित	4	25	75(25)	100	40	4×15=60	–
		0910107		4 जयशंकर प्रसाद	लिखित	4	25	75(25)	100	40	4×15=60	–
		0910108		5 प्रेमचंद	लिखित	4	25	75(25)	100	40	4×15=60	–
		0910109		6 सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'	लिखित	4	25	75(25)	100	40	4×15=60	–
		0910110		7 गजानन माधव 'मुक्तिबोध'	लिखित	4	25	75(25)	100	40	4×15=60	–
		0910165	अनिवार्य	परियोजना–तृतीय	परियोजना	4			100	40	–	60
	न0 शि0 नी0 2020 के अनुसार दशम सेम0/सेम0 चतुर्थ	1010101	अनिवार्य	छायावादोत्तर काव्य	लिखित	4	25	75(25)	100	40	4×15=60	–
		1010102	अनिवार्य	पाश्चात्य काव्यशास्त्र	लिखित	4	25	75(25)	100	40	4×15=60	–
		1010103	अनिवार्य	हिंदी आलोचना	लिखित	4	25	75(25)	100	40	4×15=60	–
			वैकल्पिक	(कोई एक विकल्प)								
		1010104		1 कौरवी लोक साहित्य	लिखित	4	25	75(25)	100	40	4×15=60	–
		1010105		2 प्रवासी हिंदी साहित्य	लिखित	4	25	75(25)	100	40	4×15=60	–
		1010106		3 प्राचीन भाषा साहित्य–संस्कृत	लिखित	4	25	75(25)	100	40	4×15=60	–
		1010107		4 प्राचीन भाषा साहित्य–प्राकृत–अपभ्रंश	लिखित	4	25	75(25)	100	40	4×15=60	–
		1010165	अनिवार्य	परियोजना–चतुर्थ	परियोजना	4	25	75(30)	100	40	–	60
			अनिवार्य	परियोजना तृतीय + परियोजना चतुर्थ	मौखिकी	8	50	150(60)	200	80	–	120

विस्तृत पाठ्यक्रम

एम0 ए0 (हिंदी)

या

बी0 ए0 (शोध सहित) हिंदी

पाठ्यक्रम प्रथम : हिंदी साहित्य का इतिहास

PROGRAMME/CLASS: M.A.	Year : P.G. Ist Year or UG in Research Fourth Year	SEMESTER: I/VII
COURSE CODE: 0710101	**COURSE TITLE** हिंदी साहित्य का इतिहास	**Theory**

एम0 ए0 हिंदी के विद्यार्थियों के लिए हिंदी गद्य तथा हिंदी पद्य का समेकित अध्ययन करना अपेक्षित है। अध्ययन की इस प्रक्रिया में उन्हें हिंदी साहित्य के आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक की विविध विचारधाराओं, परिस्थितियों, प्रवृत्तियों, कवियों तथा उनकी रचनाओं की जानकारी होना आवश्यक है। साथ ही सभी युगों के नामकरण, काल विभाजन के संदर्भ में कौन–कौन से बिंदुओं को ध्यान में रखा गया तथा किन आधारों पर नामकरण किया गया इसकी जानकारी भी होनी चाहिए। इन्हीं सब आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए हिंदी साहित्य के इतिहास के पाठ्यक्रम का अध्ययन आवश्यक है।

CREDITS: 4	**Core Compulsory**	**Max. Marks (Int. + Ext.) 25+75 Total =100 Minimum Marks : 40**

Teaching Hours = Lectures–Tutorials-Practicals (L-T-P) : 4-0-0 (FOUR Hours in a week)

संदर्भ ग्रंथ :–

Unit	Topic	No. of Lectures
I	हिंदी साहित्य के काल विभाजन का आधार, हिंदी साहित्य के इतिहास के लेखन की परम्परा।	12
II	आदिकाल का विभाजन और नामकरण, आदिकाल की पृष्ठभूमि, नाथ, सिद्ध और जैन साहित्य, रासो काव्य एवं फुटकर लौकिक साहित्य (विद्यापति, अमीर खुसरो)।	12
III	भक्तिकाल की पृष्ठभूमि, परिस्थितियाँ, भक्ति आंदोलन, भक्तिकालीन कविता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ और विशेषताएँ, निर्गुण ज्ञानमार्गी संत काव्यधारा, निर्गुण प्रेममार्गी सूफी काव्यधारा, कृष्ण भक्ति काव्य, राम भक्ति काव्य।	12
IV	रीतिकालीन कविता की पृष्ठभूमि, प्रमुख प्रवृत्तियाँ, विशेषताएँ, रीतिकालीन कविता का स्वरूप (रीतिसिद्ध, रीतिबद्ध, रीतिमुक्त)।	12
V	आधुनिक साहित्य की पृष्ठभूमि, परिस्थितियाँ, विचारधाराएँ, भारतेंदु युग, द्विवेदी युग, छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता, समकालीन कविता।	12

शिक्षण विधि: व्याख्यान, समूह चर्चा,एसाइनमेंट, ई–कंटेंट इत्यादि।

सतत् आंतरिक मूल्यांकन (25 अंक)–

लिखित परीक्षा (15 अंक) + पाठयेत्तर गतिविधियां (क्विज, असाइनमेंट, पुस्तक समीक्षा, निबंध, रोल प्ले, सेमिनार आदि) (10 अंक)

वाह्य मूल्यांकन (75 अंक)–

निबंधात्मक प्रश्न 3 x 15 = 45

लघु उत्तरीय प्रश्न 2 x 10 = 20

अति लघु उत्तरीय प्रश्न 10 x 1 = 10

कुल योग = 75

नोटः लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य–असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

1. साहित्य और इतिहास दृष्टि – मैनेजर पांडेय
2. साहित्य का इतिहास दर्शन – डॉ0 नलिन विलोचन शर्मा
3. साहित्येतिहास : संरचना और स्वरूप – डॉ0 सुमन राजे
4. हिंदी साहित्येतिहास : पाश्चात्य स्रोतों का अध्ययन – डॉ0 हरमहेंद्र सिंह बेदी
5. हिंदी साहित्य की भूमिका – आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
6. हिंदी साहित्य का अतीत (भाग 1, 2) – आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
7. हिंदी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचंद्र शुक्ल
8. हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास – आचार्य रामकुमार वर्मा
9. हिंदी साहित्य का इतिहास (नवीन संस्करण) – डॉ0 नगेंद्र (संपा0)
10. हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास (दो खंड) – डॉ0 गणपति चंद्र गुप्त
11. रासो विमर्श – माता प्रसाद गुप्त
12. हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ0 मनमोहन सहगल
13. हिंदी साहित्य का इतिहास – विजयेंद्र स्नातक
14. हिंदी साहित्य का प्रवृत्तिपरक इतिहास(खण्ड 1,2) – राम प्रसाद मिश्र
15. हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास – डॉ0 बच्चन सिंह
16. हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास – डॉ0 रामस्वरूप चतुर्वेदी
17. हिंदी साहित्य का वृहत् इतिहास (भाग 15) – डॉ0 नगेंद्र (संपा)
18. आधुनिक हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास – डॉ0 बच्चन सिंह
19. आधुनिक हिंदी कविता – डॉ0 हरदयाल
20. दक्खिनी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास – डॉ0 इकबाल सिंह
21. दक्खिनी हिंदी का सूफी साहित्य – डॉ0 बी0 पी0 मुहम्मद कुंज मेत्तर
22. हिंदी साहित्य की विश्वयात्रा – सुरेश ऋतुपर्ण (संपा0)
23. हिंदी भाषा और साहित्य को आर्यसमाज की देन – डॉ0 लक्ष्मीनारायण गुप्त
24. हिंदी काव्य पर आर्य समाज का प्रभाव – डॉ0 भवानी लाल भारतीय
25. हिंदी साहित्य का आदिकाल – आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
26. हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ0 देवीशरण रस्तोगी

27.	हिंदी साहित्य के इतिहास की समस्याएँ	–	डॉ0 अवधेश प्रधान
28.	भारतीय साहित्य के इतिहास की समस्याएं	–	रामविलास शर्मा
29.	आधुनिकता और हिंदी साहित्य	–	इंद्रनाथ मदान
30.	आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास	–	डॉ0 बच्चन सिंह
31.	नई कविता की मानक कृतियाँ	–	जीवन प्रकाश जोशी
32.	हिंदी साहित्य का आधुनिक काल	–	डॉ0 ईश्वर दत्त शील व डॉ0 आभा रानी
33.	हिंदी कविता के प्रमुख वाद	–	डॉ0 आदित्य प्रचंडिया
34.	हिंदी नवजागरण और संस्कृति	–	शंभूनाथ
35.	हिंदी वाङ्मय बीसवीं शती	–	डॉ0 नगेंद्र (संपा)
36.	स्वातंत्र्योतर हिंदी साहित्य	–	ब्चन

पाठ्यक्रम द्वितीय : प्राचीन एवं पूर्व मध्यकालीन काव्य		
PROGRAMME/CLASS: M.A.	**Year : P.G. Ist Year or UG in Research Fourth Year**	**SEMESTER: I/VII**
COURSE CODE: 0710102	**COURSE TITLE** प्राचीन एवं पूर्व मध्यकालीन काव्य	**Theory**

हिंदी के आदिकालीन काव्य की पृष्ठभूमि में अपभ्रंश का बड़ा योगदान है। आदिकालीन काव्य, प्रबंध, मुक्तक आदि अनेक काव्य रूपों में रचा गया है तथा इसकी अभिव्यंजना अपभ्रंश, अवहट्ठ तथा देशी भाषा में की गई है। इस साहित्य ने परवर्ती कालों को प्रभावित करने में सक्रिय तथा सक्षम भूमिका का निर्वाह किया है। अतः इस काल के साहित्य का अध्ययन किये बिना परवर्ती काल के साहित्य का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता। पूर्व मध्यकालीन (भक्तिकालीन) साहित्य लोक–जागरण और लोक–मंगल से परिपूरित था। इसने भारत की भावनात्मक एकता और सांस्कृतिक परंपरा को सुरक्षित रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया। उस समय के साहित्य में भाषा तथा कला के सौंदर्य को परखने तथा समाज और संस्कृति को जानने के लिए आदिकालीन व भक्तिकालीन कविता का अध्ययन आवश्यक है।

(इस पाठ्यक्रम में रचनाओं के साथ–साथ, इस समयावधि के रचनाकर्म, उसकी विशिष्टताओं पर व्यापक चर्चा एवं समीक्षा की जानी अपेक्षित है।)

CREDITS: 4	**Core Compulsory**	**Max. Marks (Int. + Ext.) 25+75 Total =100 Minimum Marks : 40**

Teaching Hours = Lectures–Tutorials-Practicals (L-T-P) : 4-0-0 (FOUR Hours in a week)

Unit	Topic	No. of Lectures
I	चंदबरदायी– पद्मावती समय, संपादक : हजारी प्रसाद द्विवेदी एवं नामवर सिंह विद्यापति – विद्यापति, संपादक : डॉ0 शिवप्रसाद सिंह (पद सं0–15, 23, 26, 36, 58, 78, 93)	15
II	कबीर– कबीर ग्रंथावली, संपादक : डॉ0 श्यामसुंदर दास (30 साखियां–प्रारंभिक)	10
III	मलिक मुहम्मद जायसी– पद्मावत, संपादक : आचार्य रामचंद्र शुक्ल (मानसरोदक खंड) सूरदास– भ्रमरगीत सार, संपादक : आचार्य रामचंद्र शुक्ल (पद सं0–7, 8, 23, 29, 30, 41, 42, 52, 57, 64, 69, 70, 85, 90, 94)	20
IV	तुलसीदास– रामचरितमानस, गीता प्रेस (उत्तर कांड के आंरभिक 10 दोहे तथा 10 चौपाइयाँ)	10

V	द्रुतपाठ :– अमीर खुसरो, नानक, गोरखनाथ, मीराबाई, रैदास, कुंभनदास, कुतुबन।	05

शिक्षण विधि: व्याख्यान, समूह चर्चा, एसाइनमेंट, ई–कंटेंट इत्यादि।

सतत् आंतरिक मूल्यांकन (25 अंक)–

लिखित परीक्षा (15 अंक) + पाठयेत्तर गतिविधियां (क्विज, असाइनमेंट, पुस्तक समीक्षा, निबंध, रोल प्ले, सेमिनार आदि) (10 अंक)

वाह्य मूल्यांकन (75 अंक)–

निबंधात्मक प्रश्न 3 x 15 = 45

लघु उत्तरीय प्रश्न 2 x 10 = 20

अति लघु उत्तरीय प्रश्न 10 x 1 = 10

कुल योग = 75

नोटः लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य–असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. चंदबरदायी और उनका काव्य – डॉ0 विपिन बिहारी त्रिवेदी
2. पृथ्वीराज रासो का अध्ययन – डॉ0 विजय कुलश्रेष्ठ
3. पृथ्वीराज रासो : भाषा और साहित्य – डॉ0 नामवर सिंह
4. कबीर – हजारी प्रसाद द्विवेदी
5. कबीर की विचारधारा – गोविंद त्रिगुणायत
6. कबीर दर्शन – रामजीलाल सहायक
7. कबीर : एक नई दृष्टि – डॉ0 रघुवंश
8. कबीर का रहस्यवाद – डॉ0 रामकुमार वर्मा
9. कबीर का रहस्यवाद – आचार्य परशुराम चतुर्वेदी

10.	जायसी ग्रंथावली	—	आचार्य रामचंद्र शुक्ल (भूमिका भाग) (संपा)
11.	जायसी और उनका काव्य	—	डॉ० शिवसहाय पाठक
12.	जायसी	—	विजय देव नारायण साही
13.	पद्मावत में लोक तत्व	—	डॉ० रवींद्र भ्रमर
14.	सूर और उनका साहित्य	—	डॉ० हरवंशलाल शर्मा
15.	सूर सर्वस्व	—	प्रभुदयाल मीतल
16.	सूर की काव्य साधना	—	डॉ० गोविंद राम शर्मा
17.	सूर की काव्य कला	—	मनमोहन गौतम
18.	भ्रमरगीत सार (भूमिका भाग)	—	आचार्य रामचंद्र शुक्ल
19.	सूर की सांस्कृतिक चेतना और उनका युगबोध	—	डॉ० संतराम वैश्य
20.	तुलसीदास	—	आचार्य रामचंद्र शुक्ल
21.	गोसाई तुलसीदास	—	आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
22.	तुलसीदास और उनका युग	—	डॉ० राजपत दीक्षित
23.	तुलसी काव्य मीमांसा	—	डॉ० उदय भानु सिंह
24.	दोहा कोश	—	राहुल सांकृत्यायन
25.	सिद्ध साहित्य	—	डॉ० धर्मवीर भारती
26.	सरहपा और कबीर	—	कौशलेंद्र पांडे
27.	विद्यापति	—	डॉ० शिवप्रसाद सिंह
28.	विद्यापति	—	डॉ० आनंद प्रकाश दीक्षित
29.	विद्यापति ठाकुर	—	डॉ० उमेश मिश्र
30.	विद्यापति	—	प्रो० जनार्दन मिश्र
31.	नंददास : जीवन और काव्य	—	भवानी दत्त उप्रेती
32.	नंददास उनका जीवन और काव्य	—	सावित्री अवस्थी
33.	युग प्रवर्तक संत गुरू रविदास	—	योगेंद्र सिंह
34.	संत रैदासः कृतित्व, जीवन और विचार	—	योगेंद्र सिंह
35.	रहीम और उनका काव्य	—	डॉ० देशराज सिंह भाटी
36.	हिंदी के प्राचीन प्रतिनिधि कवि	—	डॉ० द्वारिका प्रसाद सक्सेना
37.	हिंदी संत काव्यों में परम्परा और प्रयोग	—	डॉ० भगवान देव पांडेय
38.	संतो राह दुऔ हम दीठा	—	डॉ० भगवान देव पांडेय (संपा)

39.	आदिकालीन हिंदी साहित्य शोध	–	हरीश
40.	कबीर एक अनुशीलन	–	डॉ0 रामकुमार वर्मा
41.	महाकवि तुलसीदास और युग संदर्भ	–	भगीरथ मिश्र
42.	कबीर	–	विजयेंद्र स्नातक
43.	अमीर खुसरो का हिंदी काव्य	–	गोपीचंद नारंग
44.	संत रैदास	–	पद्मावती झुनझुनवाला
45.	हिंदी साहित्य का अतीत (भाग–1 व 2)	–	विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
46.	मीरा ग्रंथावली	–	विद्या निवास मिश्र, गोविंद रजनीश (संपा)
47.	तुलसी संदर्भ	–	डॉ0 नगेंद्र
48.	भक्ति आंदोलन और सूरदास का काव्य	–	प्रो0 मैनेजर पांडेय
49.	तुलसी आधुनिक वातायन से	–	रमेश कुंतल

पाठ्यक्रम तृतीयः नाटक और रंगमंच		
PROGRAMME/CLASS: M.A.	**Year : P.G. Ist Year or UG in Research Fourth Year**	**SEMESTER: I/VII**
COURSE CODE: 0710103	**COURSE TITLE** नाटक और रंगमंच	**Theory**
नाटक, साहित्य की महत्त्वपूर्ण तथा प्राचीन विधा है। आचार्य भरत के नाट्य चिंतन से लेकर आधुनिक भारतीय तथा पाश्चात्य नाट्य चिंतन के प्रसिद्ध चिंतकों का अध्ययन नाटक के स्वरूप को समझने के लिए आवश्यक है। नाटक, यथार्थ एवं कल्पना के मेलजोल से विलक्षण रूप धारण कर दृष्टा एवं पाठक दोनों को मनोरंजन तो प्रदान करता ही है, साथ ही साथ अपने साध्य में दृश्य होने के कारण रंगमंच से भी सीधे जुड़ा हुआ है। हिंदी नाटक में ऐतिहासिकता के साथ–साथ जीवन की विसंगतियाँ और विद्रूपताएँ भी दृष्टिगत होती हैं इन सबको जानने–समझने के लिए इस विधा का अध्ययन आवश्यक है।		
CREDITS: 4	**Core Compulsory**	**Max. Marks (Int. + Ext.) 25+75 Total =100 Minimum Marks : 40**
Teaching Hours = Lectures–Tutorials-Practicals (L-T-P) : 4-0-0 (F0UR Hours in a week)		

Unit	Topic	No. of Lectures
I	नाट्य भेद– भारतीय रूपक–उपरूपकों के भेद (सामान्य परिचय) नाटक तथा रंगमंच का स्वरूप।	10
II	नाट्य विधान : भारतीय एवं पाश्चात्य दृष्टि से नाट्य तत्त्वों का विस्तृत विवेचन रंगमंच के प्रकार, रंगशिल्प, रंग संप्रेषण के विविध घटक (मूर्त एवं अमूर्त) रंगमंच– पारसी, पृथ्वी थियेटर, इप्टा, प्रमुख सरकारी रंग संस्थाएँ। लोक नाट्य (व्यावसायिक, अव्यावसायिक),नुक्कड़ नाटक।	15
III	**नाटक** अंधेर नगरी – भारतेंदु हरिश्चंद्र चंद्रगुप्त – जयशंकर प्रसाद	15
IV	अंधा युग – धर्मवीर भारती	10
V	**एकांकी** चारुमित्रा –रामकुमार वर्मा, अंडे के छिलके –मोहन राकेश, सीमा–रेखा –विष्णु प्रभाकर **द्रुत पाठ** लक्ष्मी नारायण लाल, उदयशंकर भट्ट, जगदीशचंद्र माथुर, सुरेंद्र वर्मा, भीष्म साहनी, हबीब तनवीर	10

शिक्षण विधि: व्याख्यान, समूह चर्चा, एसाइनमेंट, ई–कंटेंट इत्यादि।

सतत् आंतरिक मूल्यांकन (25 अंक)–

लिखित परीक्षा (15 अंक) + पाठयेत्तर गतिविधियां (क्विज, असाइनमेंट, पुस्तक समीक्षा, निबंध, रोल प्ले, सेमिनार आदि) (10 अंक)

वाह्य मूल्यांकन (75 अंक)–

निबंधात्मक प्रश्न	3 x 15 = 45
लघु उत्तरीय प्रश्न	2 x 10 = 20
अति लघु उत्तरीय प्रश्न	10 x 1 = 10
कुल योग	= 75

नोटः लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य–असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. सत्य हरिश्चंद्र – भारतेंदु हरिश्चंद्र
2. कोणार्क – जगदीश चंद्र माथुर
3. आठवॉं सर्ग – सुरेंद्र वर्मा
4. चरनदास चोर – हबीब तनवीर
5. बकरी – सर्वेश्वर दयाल सक्सेना
6. अंधेर नगरी – भारतेंदु हरिश्चंद्र
7. चंद्रगुप्त – जयशंकर प्रसाद

8.	आषाढ़ का एक दिन	–	मोहन राकेश
9.	अंधायुग	–	धर्मवीर भारती
10.	प्रसाद के नाटकों का षास्त्रीय अध्ययन	–	डॉ0 जगन्नाथ प्रसाद शर्मा
11.	प्रसाद का नाट्य कर्म	–	डॉ0 सत्येंद्र कुमार तनेजा
12.	प्रसाद के नाटक : स्वरूप और संरचना	–	गोविंद चातक
13.	विष्णु प्रभाकर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व	–	डॉ0 राजलक्ष्मी नायडू
14.	एकांकी और एकांकीकार	–	रामचरण महेन्द्र
15.	हिंदी के प्रतिनिधि एकांकीकार	–	डॉ0 द्वारिका प्रसाद सक्सेना
16.	हिंदी एकांकी : अध्ययन	–	डॉ0 अब्दुर्रशीद ए0 शेख
17.	कोणार्क	–	जगदीश चंद्र माथुर
18.	आठवॉं सर्ग	–	सुरेंद्र वर्मा
19.	चरनदास चोर	–	हबीब तनवीर
20.	बकरी	–	सर्वेश्वर दयाल सक्सेना
21.	अंधेर नगरी	–	भारतेंदु हरिश्चंद्र
22.	चंद्रगुप्त	–	जयशंकर प्रसाद
23.	आषाढ़ का एक दिन	–	मोहन राकेश
24.	अंधायुग	–	धर्मवीर भारती
25.	प्रसाद के नाटकों का षास्त्रीय अध्ययन	–	डॉ0 जगन्नाथ प्रसाद शर्मा
26.	प्रसाद का नाट्य कर्म	–	डॉ0 सत्येंद्र कुमार तनेजा
27.	प्रसाद के नाटक : स्वरूप और संरचना	–	गोविंद चातक
28.	विष्णु प्रभाकर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व	–	डॉ0 राजलक्ष्मी नायडू
29.	एकांकी और एकांकीकार	–	रामचरण महेन्द्र
30.	हिंदी के प्रतिनिधि एकांकीकार	–	डॉ0 द्वारिका प्रसाद सक्सेना

31.	हिंदी एकांकी : समग्र अध्ययन	–	डॉ0 अब्दुर्रशीद ए0 शेख
32.	आधुनिक हिंदी नाटक और रंगमंच	–	लक्ष्मीनारायण लाल
33.	नाट्य विमर्श	–	नर नारायण राय
34.	सत्य हरिश्चंद्र	–	भारतेंदु हरिश्चंद्र
35.	कोणार्क	–	जगदीश चंद्र माथुर
36.	आठवॉं सर्ग	–	सुरेंद्र वर्मा
37.	चरनदास चोर	–	हबीब तनवीर
38.	बकरी	–	सर्वेश्वर दयाल सक्सेना
39.	अंधेर नगरी	–	भारतेंदु हरिश्चंद्र
40.	चंद्रगुप्त	–	जयशंकर प्रसाद
41.	आषाढ़ का एक दिन	–	मोहन राकेश
42.	अंधायुग	–	धर्मवीर भारती
43.	प्रसाद के नाटकों का षास्त्रीय अध्ययन	–	डॉ0 जगन्नाथ प्रसाद शर्मा
44.	प्रसाद का नाट्य कर्म	–	डॉ0 सत्येंद्र कुमार तनेजा
45.	प्रसाद के नाटक : स्वरूप और संरचना	–	गोविंद चातक
46.	विष्णु प्रभाकर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व	–	डॉ0 राजलक्ष्मी नायडू
47.	एकांकी और एकांकीकार	–	रामचरण महेन्द्र
48.	हिंदी के प्रतिनिधि एकांकीकार	–	डॉ0 द्वारिका प्रसाद सक्सेना
49.	हिंदी एकांकी : समग्र अध्ययन	–	डॉ0 अब्दुर्रशीद ए0 शेख
50.	आधुनिक हिंदी नाटक और रंगमंच	–	लक्ष्मीनारायण लाल
51.	नाट्य विमर्श	–	नर नारायण राय
52.	स्तानिस्लव्सकी– भूमिका की तैयारी	–	आचार्य विश्वनाथ मिश्र
53.	स्तानिस्लव्सकी–भूमिका की संरचना	–	आचार्य विश्वनाथ मिश्र

54.	स्तानिस्लव्सकी–रचना की प्रक्रिया	–	आचार्य विश्वनाथ मिश्र
55.	भारतीय नाट्य रंगमंच	–	आचार्य विश्वनाथ मिश्र
56.	हिंदी नाटक : आज और कल	–	वीणा गौतम
57.	भारतीय और पाश्चात्य नाट्य सिद्धांत	–	डॉ0 विश्वनाथ मिश्र
58.	अंधा युग पाठ दर्शन	–	जयदेव तनेजा
59.	गीति नाट्य सिद्धांत और समीक्षा	–	डॉ0 शिवशंकर कटारे
60.	नाटक का रंग विधान	–	डॉ0 विश्वनाथ मिश्र
61.	मोहन राकेश और उनके नाटक	–	डॉ0 पट्टण शेट्टी
62.	एकांकी और एकांकीकार	–	रामचरण महेंद्र
63.	हिंदी नाटक आज और कल	–	जयदेव तनेजा
64.	राष्ट्रीय नवजागरण और प्रसाद के नाटक	–	डॉ0 इंदुमति सिंह
65.	हिंदी नाटक आज तक	–	डॉ0 वीणा गौतम
66.	नाटक का आज तक	–	बी0 डी0 गुप्ता
67.	नाटक का समाजशास्त्र	–	विपिन गुप्त
68.	हिंदी नाटक में समसामयिक परिवेश	–	बाबू राम सिंह 'लमगोड़ा'
69.	नाट्य संरचना	–	जयदयाल
70.	नाट्यशास्त्र और अभिनय कला	–	गिरीश रस्तोगी
71.	हिंदी नाटक नई दिशाएं नए प्रश्न	–	गिरीश रस्तोगी
72.	मोहन राकेश और उनके नाटक	–	गिरीश रस्तोगी
73.	हिंदी नाटक एवं रंगमंच	–	सं0 नेमिचंद्र जैन
74.	प्रसाद के नाटक	–	सिद्धनाथ कुमार
75.	हिंदी नाटक : उद्‌भव और विकास	–	डॉ0 दशरथ ओझा
76.	नाटक के रंगमंचीय प्रतिमान	–	डॉ0 वशिष्ठ नारायण त्रिपाठी।

पाठ्यक्रम चतुर्थ : प्रयोजनमूलक हिंदी

PROGRAMME/CLASS: M.A.	Year : P.G. Ist Year or UG in Research Fourth Year	SEMESTER: I/VII
COURSE CODE: 0710104	COURSE TITLE प्रयोजनमूलक हिंदी	Theory

आज हिंदी का प्रयोग साहित्य, सृजनात्मक लेखन के साथ–साथ कार्यालय, पत्रकारिता, कंप्यूटर तथा अनुवाद के क्षेत्र में भी अधिकाधिक हो रहा है। कार्यालयी हिंदी की संरचना साहित्यिक हिंदी तथा सृजनात्मक हिंदी से अलग है। इसी तरह इंटरनेट तथा अनुवाद में हिंदी का स्वरूप अलग है। हिंदी के इन विविध रूपों का अध्ययन करना हिंदी के आधुनिक स्वरूप को जानने, समझने के लिए आवश्यक है। इस प्रक्रिया में कार्यालयी हिंदी के औपचारिक लेखन के स्वरूप का अध्ययन अपेक्षित है, साथ ही, अनुवाद के विविध रूप, प्रक्रिया एवं प्रविधि तथा उनके क्षेत्रों की विस्तृत जानकारी के लिए यह पाठ्यक्रम तैयार किया गया है।

CREDITS: 4	Core Compulsory	Max. Marks (Int. + Ext.) 25+75 Total =100 Minimum Marks : 40

Teaching Hours = Lectures–Tutorials-Practicals (L-T-P) : 4-0-0 (FOUR Hours in a week)

Unit	Topic	No. of Lectures
I	**कामकाजी हिंदी** : हिंदी के विभिन्न रूप–सर्जनात्मक भाषा, संचार भाषा, राज भाषा, माध्यम भाषा, मातृ भाषा।	10
II	कार्यालयी हिंदी (राजभाषा) के प्रमुख प्रकार्य : प्रारूपण, पत्र लेखन, टिप्पण, संक्षेपण, पल्लवन।	10
III	जनसंचार माध्यमों में हिंदी लेखन, रिपोर्ट–लेखन, संपादकीय, अग्रलेखन, लघु टिप्पणियाँ।	10
IV	**हिंदी कंप्यूटिंग** कंप्यूटर : परिचय, रूपरेखा, उपयोग तथा क्षेत्र, वेब–पब्लिशिंग का परिचय। इंटरनेट सम्पर्क उपकरणों का परिचय, प्रकार्यात्मक रख–रखाव एवं इंटरनेट समय मितव्ययता के सूत्र, वेब–पब्लिशिंग, इंटरनेट एक्सप्लोरर अथवा नेटस्केप, लिंक, ब्राउजिंग, ई–मेल भेजना/प्राप्त करना।	20
V	**अनुवाद** अनुवाद का स्वरूप, क्षेत्र, प्रक्रिया एवं प्रविधि, कार्यालयी हिंदी और अनुवाद। अनुवाद का अन्य क्षेत्र : वाणिज्यिक, वैज्ञानिक, तकनीकी, प्रौद्योगिकी, विधि, साहित्य, कार्यालयी।	10

शिक्षण विधि: व्याख्यान, समूह चर्चा, एसाइनमेंट, ई–कंटेंट इत्यादि।

सतत् आंतरिक मूल्यांकन (25 अंक)–

लिखित परीक्षा (15 अंक) + पाठयेत्तर गतिविधियां (क्विज, असाइनमेंट, पुस्तक समीक्षा, निबंध, रोल प्ले, सेमिनार आदि) (10 अंक)

वाह्य मूल्यांकन (75 अंक)–

निबंधात्मक प्रश्न	3 x 15	= 45
लघु उत्तरीय प्रश्न	2 x 10	= 20
अति लघु उत्तरीय प्रश्न	10 x 1	= 10
कुल योग		= 75

नोटः लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य–असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. प्रयोजनमूलक हिंदी – विनोद गोदरे
2. प्रयोजनमूलक हिंदी : सिद्धांत और प्रयोग – दंगल झाल्टे
3. टिप्पणी प्रारूप – शिवनारायण चतुर्वेदी
4. प्रालेखन प्रारूप – शिवनारायण चतुर्वेदी
5. राजभाषा विविधा – माणिक मृगेश
6. व्यावसायिक हिंदी – रहमतुल्लाह
7. पत्र–व्यवहार निर्देशिका – भोलानाथ तिवारी, विजय कुलश्रेष्ठ
8. प्रारूपण, टिप्पण और प्रूफ पठन – भोलानाथ तिवारी
9. व्यावहारिक हिंदी और स्वरूप – कृष्ण कुमार गोस्वामी
10. प्रयोजनमूलक हिंदी – (संपा) कृष्ण कुमार गोस्वामी
11. अनुवाद सिद्धांत की रूपरेखा – सुरेश कुमार
12. भाषा और प्रौद्योगिकी – (संपा) गिरिराज किशोर
13. व्यावसायिक हिंदी – डॉ0 प्रेमचंद पातंजलि
14. संप्रेषण एवं बैकिंग व्यवस्था – डॉ0 सुभाष गौड़

15. अनुवाद प्रक्रिया – डॉ0 रीता रानी पालीवाल
16. व्यावहारिक हिंदी – कैलाश चन्द्र भाटिया
17. बैंकों में प्रयोजन शील हिंदी – अनिल कुमार तिवारी
18. व्यावसायिक हिंदी – डॉ0 ओम प्रकाश सिंघल
19. साधारण बीमा व्यवसाय में हिंदी का प्रयोग – श्रीराम मुंढे
20. कंप्यूटर और हिंदी – डॉ0 हरिमोहन
21. कार्यालय कार्यबोध – हरिबाबू कंसल
22. व्यावहारिक हिंदी – डॉ0 लक्ष्मीकांत पांडेय
23. संक्षेपण और विस्तारण – कैलाशचंद्र भाटिया
24. प्रयोजनमूलक हिंदी – रघुनंदन प्रसाद शर्मा
25. प्रयोजनमूलक हिंदी: संरचना एवं अनुप्रयोग – डॉ0 रामप्रकाश / डॉ0 दिनेश गुप्त
26. प्रशासनिक हिंदी – डॉ0 ओम प्रकाश
27. प्रयोजनमूलक व्यावहारिक हिंदी – डॉ0 ओम प्रकाश सिंघल
28. अनुवाद की व्यावहारिक समस्याएँ – भोलानाथ तिवारी / ओम प्रकाश गाबा
29. राजभाषा हिंदी – डॉ0 कैलाश चंद्र भाटिया
30. सरकारी कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग – गोपीनाथ श्रीवास्तव
31. प्रशासनिक कार्यालय की हिंदी – डॉ0 रामप्रकाश / डॉ0 दिनेश कुमार गुप्त
32. व्यावहारिक हिंदी – डॉ0 रवींद्रनाथ / डॉ0 भोलानाथ तिवारी
33. व्यावहारिक हिंदी पत्राचार – डॉ0 दंगल झाल्टे
34. प्रयोजनमूलक हिंदी – कमल कुमार बोस
35. हिंदी की मानक वर्तनी – कैलाश चंद्र भाटिया / रचना भाटिया
36. हिंदी की मानक वर्तनी – डॉ0 भांकर भोष, डॉ0 कंचन शर्मा
37. भाषा और प्राद्योगिकी – विनोद कुमार प्रसाद
38. नई पत्रकारिता और समाचार लेखन – सविता चड्ढा
39. पत्रकारिता के सिद्धान्त – रमेश चंद्र त्रिपाठी
40. समाचार माध्यम: संगठन एवं प्रबंध – संजीव भानावत
41. प्रशासनिक हिंदी: टिप्पण प्रारूपण एवं पत्र लेखन – डॉ0 हरिमोहन
42. हिंदी पत्रकारिता: दशा और दिशा – डॉ0 कैलाश नारद
43. आधुनिक जनसंचार और हिंदी – डॉ0 हरिमोहन
44. राजभाषा हिंदी – डॉ0 कैलाश चंद्र भाटिया
45. नई पत्रकारिता और समाचार लेखन – सविता चड्ढा
46. आधुनिक जनसंचार और हिंदी – डॉ0 हरिमोहन
47. इलैक्ट्रॉनिक मीडिया – टी0डी0एस0 आलोक
48. प्रयोजनमूलक कामकाजी हिंदी -- कैलाश चंद्र भाटिया
49. रेडियों और दूरदर्शन पत्रकारिता – डॉ0 हरिमोहन
50. जनसंचार माध्यमों में हिंदी – चन्द्र कुमार
51. संचार माध्यमों का वैचारिक परिप्रेक्ष्य – जवरीमल्ल पारख
52. कंप्यूटर के भाषिक अनुप्रयोग – विजय कुमार मल्होत्रा

53.	सम्पादन कला	–	(संपा) के0सी0 नारायण
54.	अनुवाद कला	–	डॉ0 एन0ई0 विश्वनाथ अय्यर
55.	आधुनिक विज्ञापन	–	प्रेमचंद पातंजलि
56.	सम्पादन कला एवं प्रूफ पठन	–	डॉ0 हरिमोहन
57.	आधुनिक जनसंचार और हिंदी	–	डॉ0 हरिमोहन
58.	भारतीय प्रसारण माध्यम	–	डॉ0 कृष्ण कुमार रत्तू
59.	इलैक्ट्रानिक मीडिया	–	टी0डी0एस0 आलोक
60.	उत्तर आधुनिक मीडिया तकनीक	–	हर्षदेव

पाठ्यक्रम पंचम : (क) निबंध व व्यंग्य साहित्य (वैकल्पिक)		
PROGRAMME/CLASS: **M.A.**	**Year : P.G. Ist Year or UG in Research Fourth Year**	**SEMESTER:** **I/VII**
COURSE CODE: **0710105**	**COURSE TITLE** (क) निबंध व व्यंग्य साहित्य	**Theory**
हिंदी साहित्य की विधाओं में कथा–साहित्य व नाट्य साहित्य से इतर सृजनधर्मी रचनाकारों द्वारा लिखित अन्य विधाओं का अध्ययन भी अपेक्षित है। इस प्रश्न पत्र में विद्यार्थियों को निबन्ध व व्यंग्य के अध्ययन का अवसर प्राप्त होगा। (इस पाठ्यक्रम में रचनाओं के साथ–साथ, इस समयावधि के अन्य रचनाकर्म, उनकी विशिष्टताओं पर व्यापक चर्चा एवं समीक्षा की जानी अपेक्षित है।)		
CREDITS: 4	**Core Compulsory**	**Max. Marks** **(Int. + Ext.) 25+75** **Total =100** **Minimum Marks : 40**
Teaching Hours = Lectures–Tutorials-Practicals (L-T-P) : 4-0-0 (FOUR Hours in a week)		

Unit	Topic	No. of Lectures
I	निबंध– परिभाषा, प्रकार, विशेषताएँ व अंग।	10
II	निबंध– कविता क्या है – आचार्य रामचंद्र शुक्ल नाखून क्यों बढ़ते हैं – हजारी प्रसाद द्विवेदी उठ जाग मुसाफिर – विवेकी राय	15
III	व्यंग्य– अर्थ, परिभाषा व स्वरूप, प्रमुख व्यंग्यकार	10
IV	व्यंग्य– अंगद का पांव – श्रीलाल शुक्ल इंस्पेक्टर मातादीन चांद पर – हरिशंकर परसाई होना कुछ नहीं का – शरद जोशी एक दीक्षांत भाषण – रवींद्र नाथ त्यागी	15
V	द्रुतपाठ– प्रतापनारायण मिश्र, सरदार पूर्ण सिंह, कुबेर नाथ राय, रामधारी सिंह दिनकर, महादेवी वर्मा, रामनरेश त्रिपाठी, विद्यानिवास मिश्र ।	10

शिक्षण विधि: व्याख्यान, समूह चर्चा, एसाइनमेंट, ई–कंटेंट इत्यादि।

सतत् आंतरिक मूल्यांकन (25 अंक)–

लिखित परीक्षा (15 अंक) + पाठयेत्तर गतिविधियां (क्विज, असाइनमेंट, पुस्तक समीक्षा, निबंध, रोल प्ले, सेमिनार आदि) (10 अंक)

वाह्य मूल्यांकन (75 अंक)–

निबंधात्मक प्रश्न 3 x 15 = 45

लघु उत्तरीय प्रश्न 2 x 10 = 20

अति लघु उत्तरीय प्रश्न 10 x 1 = 10

कुल योग = 75

नोटः लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य–असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. आचार्य रामचंद्र शुक्ल – (सम्पादक) डॉ0 सुरेश चंद त्यागी
2. मेरे प्रिय निबंध – डॉ0 नगेंद्र
3. साहित्य में गद्य की नई विविध विधाएँ – डॉ0 कैलाश चंद भाटिया
4. प्रतिनिधि हिंदी निबंधकार – डॉ0 हरीमोहन
5. निबंधकार हजारी प्रसाद द्विवेदी – उषा सिंघल
6. राग दरबारी – श्रीलाल शुक्ल
7. आधुनिक निबंध साहितय में मनोवैज्ञानिक उद्भावनाएँ – डॉ0 (श्रीमती) प्रेम सिंह
8. व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई की सामाजिक प्रतिबद्धता – संजय शर्मा
9. सर्जना साहित्यिक निबंध – डॉ0 पीतांबर सरौदे
10. हिंदी गद्य विन्यास और विकास – रामस्वरूप चतुर्वेदी
11. हिंदी का गद्य साहित्य – रामचंद्र तिवारी
12. आचार्य रामचंद्र शुक्ल – (सम्पादक) डॉ0 सुरेश चंद त्यागी
13. मेरे प्रिय निबंध – डॉ0 नगेंद्र
14. साहित्य में गद्य की नई विविध विधाएँ – डॉ0 कैलाश चंद भाटिया

15. प्रतिनिधि हिंदी निबंधकार – डॉ0 हरीमोहन
16. निबंधकार हजारी प्रसाद द्विवेदी – उषा सिंघल
17. राग दरबारी – श्रीलाल शुक्ल
18. आधुनिक निबंध साहित्य में मनोवैज्ञानिक उद्भावनाएँ – डॉ0 (श्रीमती) प्रेम सिंह
19. व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई की सामाजिक प्रतिबद्धता – संजय शर्मा
20. सर्जना साहित्यिक निबंध – डॉ0 पीतांबर सरौदे
21. हिंदी गद्य विन्यास और विकास – रामस्वरूप चतुर्वेदी
22. हिंदी का गद्य साहित्य – रामचंद्र तिवारी
23. आचार्य रामचंद्र शुक्ल – रामचंद्र तिवारी
24. साहित्य और समय – डॉ0 अवधेश प्रधान
25. हजारी प्रसाद द्विवेदी – विश्वनाथ त्रिपाठी (संपा)
26. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व – गणपति चंद्र गुप्त (संपा)
27. हिंदी व्यंग्य का इतिहास – सुभाष चंदर
28. हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास – बच्चन सिंह
29. आधुनिक निबंध – कमल शर्मा
30. हिंदी गद्य के आयाम – डॉ0 वेंकट शर्मा
31. आधुनिक हिंदी निबंध – डॉ0 राजेंद्र प्रसाद मिश्र डॉ0 मनोज मिश्र

पाठ्यक्रम पंचम : (ख) वैचारिक पृष्ठभूमि व विमर्श (वैकल्पिक)		
PROGRAMME/CLASS: M.A.	**Year : P.G. Ist Year or UG in Research Fourth Year**	**SEMESTER: I/VII**
COURSE CODE: 0710106	**COURSE TITLE** (ख) वैचारिक पृष्ठभूमि व विमर्श	**Theory**
भारतीय नवजागरण ने हिंदी के विकास व उन्नयन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी है। हिंदी के वर्तमान स्वरूप को समझने के लिए विद्यार्थियों को इसे सविस्तार समझना अपरिहार्य है। विविध विमर्श, साहित्य की मनोभूमि को प्रभावित करते हैं, उसे आकार प्रदान करते हैं। साहित्य को समाज किस प्रकार प्रभावित करता है, यह परखने के लिए विविध विमर्शों का अध्ययन अपेक्षित है।		
CREDITS: 4	**Core Compulsory**	**Max. Marks (Int. + Ext.) 25+75 Total =100 Minimum Marks : 40**
Teaching Hours = Lectures–Tutorials-Practicals (L-T-P) : 4-0-0 (FOUR Hours in a week)		

Unit	Topic	No. of Lectures
I	भारतीय नवजागरण और स्वाधीनता आंदोलन की विचारधारा हिंदी नवजागरण की भूमिका व महत्त्व। खड़ी बोली आंदोलन। फोर्ड विलियम कॉलेज की भूमिका और हिंदी पर प्रभाव।	12
II	भारतेंदु और हिंदी नव जागरण में उनकी भूमिका। महावीर प्रसाद द्विवेदी, सरस्वती पत्रिका और हिंदी नवजागरण।	12
III	दर्शन– अर्थ तथा परिभाषा, दर्शन की विशेषताएँ, दर्शन तथा शिक्षा के उद्देश्य। प्रमुख दर्शन–गाँधीवादी दर्शन, अंबेडकर दर्शन, लोहिया दर्शन।	12
IV	वाद– अर्थ व विभिन्न वाद–मार्क्सवाद, मनोविश्लेषणवाद, अस्तित्ववाद, उत्तर आधुनिकतावाद।	12
V	विमर्श– अर्थ एवं परिभाषा विविध विमर्श–नारी, दलित, आदिवासी, अल्पसंख्यक, किन्नर, किसान। अवधारणा तथा समकालीन साहित्य में उनका स्थान।	12

शिक्षण विधि: व्याख्यान, समूह चर्चा, एसाइनमेंट, ई–कंटेंट इत्यादि।

सतत् आंतरिक मूल्यांकन (25 अंक)–

लिखित परीक्षा (15 अंक) + पाठयेत्तर गतिविधियां (क्विज, असाइनमेंट, पुस्तक समीक्षा, निबंध, रोल प्ले, सेमिनार आदि) (10 अंक)

वाह्य मूल्यांकन (75 अंक)–

निबंधात्मक प्रश्न	3 x 15 = 45
लघु उत्तरीय प्रश्न	2 x 10 = 20
अति लघु उत्तरीय प्रश्न	10 x 1 = 10
कुल योग	= 75

नोटः लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य–असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. भारतेंदु – रामविलास शर्मा
2. महावीर प्रसाद द्विवेदी – रामविलास शर्मा
3. रस्साकशी – वीर भारत तलवार
4. नवजागरण कालीन पत्रकारिता (भाग 1 व 2) – सं0 कृष्णदत्त शर्मा
5. फ़ोर्ड विलियम कॉलेज – लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय
6. आदिवासी : विकास से विस्थापन – सं0 : रमणिका गुप्ता
7. औरत : अस्तित्व और अस्मिता – अरविंद जैन
8. आधी आबादी का संघर्ष – ममता जैतली, श्री प्रकाश शर्मा
9. दलित साहित्य का सौंदर्य शास्त्र – ओमप्रकाश वाल्मीकि
10. दलित–विमर्श और हिंदी साहित्य – दीपक कुमार पांडेय
11. उत्तर आधुनिक अवधारणाएँ – श्री प्रकाश मिश्र
12. आदिवासी कौन ? – सं0 : रमणिका गुप्ता
13. स्त्रीत्ववादी विमर्श : समय और साहित्य – क्षमा शर्मा

पाठ्यक्रम पंचम : (ग) संस्कृतिमूलक अध्ययन (वैकल्पिक)		
PROGRAMME/CLASS: M.A.	**Year : P.G. Ist Year or UG in Research Fourth Year**	**SEMESTER: I/VII**
COURSE CODE: 0710107	**COURSE TITLE** (ग) संस्कृतिमूलक अध्ययन	**Theory**
संस्कारों से भाषा में अपेक्षित सुधार हो सकता है, भाषा से संस्कृति का सुधार संभव है और संस्कृति से समाज में अपेक्षित परिवर्तन हो सकता हैं। भाषा साहित्य का कलेवर है। साहित्य, समाज व संस्कृति का संबंध अन्योन्याश्रित है, अतः इस पाठ्यक्रम में विद्यार्थी संस्कृति के साहित्य से संबंध का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।		
CREDITS: 4	**Core Compulsory**	**Max. Marks (Int. + Ext.) 25+75 Total =100 Minimum Marks : 40**
Teaching Hours = Lectures–Tutorials-Practicals (L-T-P) : 4-0-0 (FOUR Hours in a week)		

Unit	**Topic**	**No. of Lectures**
I	संस्कृति – अवधारणा, धर्म और संस्कृति, जाति और संस्कृति, संस्कृति की विशेषताएँ, संस्कृति, साहित्य और समाज का संबंध।	12
II	प्राच्यवादी दृष्टि– पार्श्वभूमि, अध्ययन व कला। उत्तर औपनिवेशिक दृष्टि– उद्देश्य, आधारभूत अवधारणाएँ।	12
III	भूमंडलीकरण– आशय, भूमंडलीकरण के उद्देश्य, प्रोत्साहित करने वाले कारक, भूमंडलीकरण का साहित्य पर प्रभाव।	12
IV	भूमंडलीकरण और मीडिया के दौर में संस्कृति के रूप (फिल्में, पॉपसंगीत, खेल, समारोह, फैशन आदि)	12
V	उपभोक्ता संस्कृति– परिभाषा, रूप। उपभोक्ता संस्कृति का साहित्य पर प्रभाव।	12

शिक्षण विधि: व्याख्यान, समूह चर्चा, एसाइनमेंट, ई–कंटेंट इत्यादि।

सतत् आंतरिक मूल्यांकन (25 अंक)–

लिखित परीक्षा (15 अंक) + पाठयेत्तर गतिविधियां (क्विज, असाइनमेंट, पुस्तक समीक्षा, निबंध, रोल प्ले, सेमिनार आदि) (10 अंक)

वाह्य मूल्यांकन (75 अंक)–

निबंधात्मक प्रश्न	3 x 15 = 45
लघु उत्तरीय प्रश्न	2 x 10 = 20
अति लघु उत्तरीय प्रश्न	10 x 1 = 10
कुल योग	= 75

नोटः लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य–असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. उत्तर औपनिवेशिक सिद्धांत – एक महत्वपूर्ण परिचय–लीला गाँधी
2. पश्चिमी आँखों के नीचे – चन्द्र तलपड़े मोहंती
3. संस्कृति के चार अध्याय – रामधारी सिंह दिनकर
4. संस्कृति उद्योग – टी0 डब्ल्यू रडर्नो
5. इतिहास, राजनीति और संस्कृति – एरिक जे0 हॉब्सबॉम
6. कृति विकृति संस्कृति – सत्यप्रकाश मिश्र
7. भूमंडलीकरण और मीडिया – कुमुद शर्मा
8. खेल पत्रकारिता – सुशील दोसी सुरेश कौशिक
9. मीडिया का यथार्थ – डॉ0 रतन कुमार पांडे
10. सिनेमा : कल, आज और कल – विनोद भारद्वाज
11. टेलीविजन प्रौद्योगिकी और सांस्कृतिक रूप – दीपू राय

12. मीडिया की परख — सुधीर पचौरी

13. प्रगतिशील सांस्कृतिक आंदोलन — मुरली मनोहर प्रसाद सिंह चंचल चौहान

14. संस्कृति, भाषा और राष्ट्र — रामधारी सिंह 'दिनकर'

15. पॉपुलर कल्चर — सुधीर पचौरी

16. भारतीय संस्कृति का प्रवाह — कृपाशंकर

<table>
<tr><td colspan="3">पाठ्यक्रम प्रथम : उत्तर मध्यकालीन काव्य</td></tr>
<tr><td>PROGRAMME/CLASS:
M.A.</td><td>Year : P.G. Ist Year or UG in Research Fourth Year</td><td>SEMESTER:
II/VIII</td></tr>
<tr><td>COURSE CODE:
0810101</td><td>COURSE TITLE
उत्तर मध्यकालीन काव्य</td><td>Theory</td></tr>
<tr><td colspan="3">जीवन के इहलौकिक पक्ष का संज्ञान भी महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि पारलौकिकता का द्वार यहीं से खुलता है। चार पुरुषार्थ में काम का एक स्तम्भ होना गहरे अर्थ की व्यंजना करता है जैसे काम और कला घनीभूत भाव से जुड़े हैं, वैसे ही रति और रीति भी। जहाँ 'रति' मानव हृदय की मूल प्रवृत्ति है, वहीं 'रीति' उसे मनोवांछित अभिव्यंजना देती है। हिंदी साहित्य का रीतिकाल इन्हीं मनोवृत्तियों से जुडा हुआ है। तद्युगीन परिस्थितियों के कारण प्रेम के षृंगारिक रूप की संपृक्ति बढ़ी। रसिकता और शास्त्रीयता का सुखद संयोग घटित हुआ। जीवन के मधुर पक्ष को भी ठीक से समझने के लिए रीति अथवा षृंगारकाल का अध्ययन अत्यंत आवश्यक है।
(इस पाठ्यक्रम में रचनाओं के साथ–साथ, इस समयावधि के रचनाकर्म, उसकी विशिष्टताओं पर व्यापक चर्चा एवं समीक्षा की जानी अपेक्षित है।)</td></tr>
<tr><td>CREDITS: 4</td><td>Core Compulsory</td><td>Max. Marks
(Int. + Ext.) 25+75
Total =100
Minimum Marks : 40</td></tr>
<tr><td colspan="3">Teaching Hours = Lectures–Tutorials-Practicals (L-T-P) : 4-0-0 (FOUR Hours in a week)</td></tr>
</table>

Unit	Topic	No. of Lectures
I	बिहारी– बिहारी–रत्नाकर, संपा0 श्री जगन्नाथदास 'रत्नाकर' (दोहा संख्या 1, 11, 13, 20, 21, 28, 31, 32, 42, 52, 59, 68, 73, 94, 121, 131, 141, 161, 191, 192, 201, 228, 300, 303, 321, 327, 363, 492, 677, 689)	15
II	घनानंद– 15 प्रारंभिक दोहे (घनानंद कवित्त, संपा0 अषोक षुक्ल एवं पूर्णचंद्र षर्मा)	10
III	केशवदास– बालक मृणालनि ज्यों तोरे, बानी जगरानी की उदारता, सोभित मंचन की अवली, सब जाति, फटी दुख की, सिंधु तरयो उनको बनरा	15
IV	भूषण–10 प्रारम्भिक दोहे (भूषण ग्रंथावली: संपा0 आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र)	10
V	द्रुतपाठ– देव, रसखान, सेनापति, पद्माकर, मतिराम, गिरधर कविराय, गुरु गोविंद सिंह	10

शिक्षण विधि: व्याख्यान, समूह चर्चा, एसाइनमेंट, ई–कंटेंट इत्यादि।

सतत् आंतरिक मूल्यांकन (25 अंक)–

लिखित परीक्षा (15 अंक) + पाठयेत्तर गतिविधियां (क्विज, असाइनमेंट, पुस्तक समीक्षा, निबंध, रोल प्ले, सेमिनार आदि). (10 अंक)

वाह्य मूल्यांकन (75 अंक)–

निबंधात्मक प्रश्न	3 x 15 = 45
लघु उत्तरीय प्रश्न	2 x 10 = 20
अति लघु उत्तरीय प्रश्न	10 x 1 = 10
कुल योग	= 75

नोटः लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य–असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. संक्षिप्त भूषण – भगवान दास तिवारी
2. हिंदी रीति साहित्य – भगीरथ मिश्र
3. मध्यकालीन हिंदी मुक्तकः उद्‌भव और विकास – जितेंद्रनाथ पाठक
4. देव के काव्य में अभिव्यक्ति विधान एवं समस्त संदर्भ ग्रंथ – राज बुद्धिराजा
5. रीति साहित्य की भूमिका – डॉ0 नगेंद्र
6. बिहारी रत्नाकर – बिहारी
7. घनानंद कवित्त – विश्वनाथ प्रताप मिश्र (संपा0)
8. रामचंद्रिका – केशवदास
9. मतिराम ग्रंथावली – मतिराम
10. शिवा बावनी – भूषण
11. बिहारी की वाग्विभूति – विश्वनाथ प्रताप मिश्र
12. बिहारीः नया मूल्यांकन – बच्चन सिंह
13. मीरा का काव्य – विश्वनाथ त्रिपाठी

14. घनानंद : काव्य और आलोचना – किशोरी लाल
15. केशव का आचार्यत्व – डॉ0 विजयपाल सिंह
16. आचार्य केशवदास – हीरालाल दीक्षित
17. बिहारी का नया मूल्यांकन – डॉ0 बच्चन सिंह
18. घनानंद और स्वच्छंद काव्यधारा – डॉ0 मनोहरलाल गौड़
19. रीतिकालीन कवियों की प्रेमव्यंजना – डॉ0 बच्चन सिंह
20. पद्माकर – आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
21. महाकवि मतिराम – डॉ0 त्रिभुवन सिंह
22. रीतिकालीन काव्य सिद्धांत – डॉ0 सूर्यनारायण द्विवेदी
23. हिंदी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचंद्र शुक्ल
24. रसखान रचनावली: विश्वनाथ प्रसाद मिश्र – विद्यानिवास मिश्र (संपा)
25. पद्माकर कवि – शुकदेव दुबे
26. देव के काव्य में अभिव्यक्ति विधान – राज बुद्धिराज
27. भक्ति काव्य: स्वरूप और संवेदना – डॉ0 रामनारायण शुक्ल
28. घनानंद का काव्य – डॉ0 रामदेव शुक्ल
29. रसखान काव्य और आलोचना – ब्रजभूषण सावलिया
30. बिहारी अनुशीलन – डॉ0 सरोज गुप्ता
31. पद्माकर की काव्यभाषा का शैली वैज्ञानिक अध्ययन – डॉ0 ओंकार नाथ द्विवेदी
32. रीतिमुक्त कवियों का सौंदर्यशास्त्रीय अध्ययन – डॉ0 लक्ष्मण प्रसाद शर्मा

पाठ्यक्रम द्वितीय : कथा–साहित्य

PROGRAMME/CLASS: M.A.	Year : P.G. Ist Year or UG in Research Fourth Year	SEMESTER: II/VIII
COURSE CODE: 0810102	**COURSE TITLE** कथा–साहित्य	**Theory**

हिंदी गद्य की विधाओं में कहानी एवं उपन्यास सर्वाधिक विकसित तथा लोकप्रिय विधा है। संप्रति उसने शास्त्र का रूप धारण कर लिया है, अतः इस विधा का विस्तृत अध्ययन अपेक्षित है।
(इस पाठ्यक्रम में रचनाओं के साथ–साथ, इस समयावधि के रचनाकर्म, उसकी विशिष्टताओं पर व्यापक चर्चा एवं समीक्षा की जानी अपेक्षित है।)

CREDITS: 4	Core Compulsory	Max. Marks (Int. + Ext.) 25+75 Total =100 Minimum Marks : 40

Teaching Hours = Lectures-Tutorials-Practicals (L-T-P) : 4-0-0 (F0UR Hours in a week)

Unit	Topic	No. of Lectures
I	उपन्यास एवं कहानी का स्वरूप, इतिहास, प्रमुख शैलियाँ, हिंदी के प्रतिनिधि उपन्यासकारों एवं कहानिकारों का वस्तु शिल्पगत वैशिष्ट्य ।	12
II	गोदान – प्रेमचंद	12
III	मैला आँचल – फणीश्वरनाथ 'रेणु'	12
IV	हिंदी कहानी– से0 रा0 यात्री (टापू पर अकेले), शेखर जोशी (कोसी का घटवार), अमरकांत (दोपहर का भोजन), मार्कंडेय (गुलरा के बाबा), उदय प्रकाश (तिरिछ), मन्नू भंडारी (यही सच है), कृष्णा सोबती (सिक्का बदल गया)	12
V	द्रुतपाठ– अमृतलाल नागर, हजारी प्रसाद द्विवेदी, निर्मल वर्मा, गिरिराज किशोर, शैलेश मटियानी, मृणाल पांडे, चित्रा मुद्गल, भीष्म साहनी।	12

शिक्षण विधि: व्याख्यान, समूह चर्चा, एसाइनमेंट, ई–कंटेंट इत्यादि।

सतत् आंतरिक मूल्यांकन (25 अंक)–

लिखित परीक्षा (15 अंक) + पाठयेत्तर गतिविधियां (क्विज, असाइनमेंट, पुस्तक समीक्षा, निबंध, रोल प्ले, सेमिनार आदि) (10 अंक)

वाह्य मूल्यांकन (75 अंक)–

निबंधात्मक प्रश्न	3 x 15 = 45
लघु उत्तरीय प्रश्न	2 x 10 = 20
अति लघु उत्तरीय प्रश्न	10 x 1 = 10
कुल योग	= 75

नोट: लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य–असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. गोदान – प्रेमचंद
2. मैला आंचल – फणीश्वर नाथ 'रेणु'
3. बाणभट्ट की आत्मकथा – हजारी प्रसाद 'द्विवेदी'
4. गुलरा के बाबा – मार्कंडेय
5. राग दरबारी – श्रीलाल शुक्ल
6. आँवा – चित्रा मुद्गल
7. बूँद और समुद्र – अमृतलाल नागर
8. उसने कहा था (संग्रह–) – चंद्रधर शर्मा गुलेरी
9. आकाशदीप (संग्रह–) – जयशंकर प्रसाद
10. मानसरोवर–भाग 1 – प्रेमचंद
11. तिरिछ (संग्रह–) – उदय प्रकाश
12. कोसी का घटवार – शेखर जोशी
13. दोपहर का भोजन – अमरकांत
14. कथाकार प्रेमचन्द – मनमंथनाथ गुप्त

15. यही सच है – मन्नू भंडारी
16. प्रेमचंद – (सम्पादक) सुरेश चन्द्र त्यागी
17. गोदान (पुनर्मूल्यांकन) – गोपाल राय
18. हिंदी उपन्यासः एक अंर्तयात्रा – डॉ0 रामदरश मिश्र
19. हिंदी उपन्यासः समकालीन विमर्श – डॉ0 सत्यदेव त्रिपाठी
20. राष्ट्रीय आन्दोलन और हिंदी उपन्यास – डॉ0 तेज सिंह
21. भारतीय स्वतंत्रता और हिंदी उपन्यास – डॉ0 शशि भूषण सिंघल
22. हजारी प्रसाद द्विवेदी के उपन्यासों का नव मूल्यांकन – डॉ0 उदयवीर शर्मा
23. उपन्यासों का उदय – डॉ0 धर्मपाल सरीन
24. मूल्य और हिंदी उपन्यास – डॉ0 हेमराज कोशिक
25. उपन्यास : स्वरूप और संवेदना – राजेंद्र यादव
26. गोदान – राजेश्वर गुप्ता
27. हिंदी उपन्यास की प्रवृत्तियॉं – डॉ0 शशि भूषण सिंघल
28. सिक्का बदल गया – कृष्णा सोबती
29. रागदरबारी का शैली वैज्ञानिक अध्ययन – डॉ0 राधा दीक्षित
30. उपन्यासः स्थिति और गति – चंद्रकांत बांदिवडेकर
31. हिंदी उपन्यास का इतिहास – गोपाल राय
32. हिंदी उपन्यास – डॉ0 शिवनारायण श्रीवास्तव
33. कहानीः नई कहानी – डॉ0 नामवर सिंह
34. नई कहानीः संदर्भ और प्रकृति – देवीशंकर अवस्थी (संपा)
35. कहानी आंदोलन की भूमिका – डॉ0 बलराज पाण्डेय
36. प्रेमचंदोत्तर उपन्यासों में प्रगतिशीलता – निर्मल कुमारी वार्ष्णेय
37. गोदानः नया परिप्रेक्ष्य – डॉ0 गोपाल राय
38. हिंदी उपन्यासः पहचान और परख – इन्द्रनाथ मदान (संपा)
39. आधुनिक हिंदी कथा– साहित्य मूल्यों से प्रयाण – शकुन्तला सिन्हा
40. गोदानः आलोचना ओर आलोचना – डॉ0 इंद्रनाथ मदान
41. आज की कहानी – विजयमोहन सिंह
42. कहानी : स्वरूप और संवेदना – राजेंद्र यादव
43. हिंदी उपन्यास : 1950 के बाद – नित्यानंद तिवारी
44. उपन्यास स्थिति और गति – डॉ0 चंद्रकांत वांदिवडेकर
45. आधुनिक हिंदी उपन्यास : सृजन और आलोचना – डॉ0 चंद्रकांत वादिवडेकर
46. कहानी पाठ और प्रक्रिया – सुरेंद्र चौधरी
47. यथार्थ की कथादृष्टि – राम विनय शर्मा
48. भीष्म साहनी के साहित्य का सरोकार – राम विनय शर्मा

पाठ्यक्रम तृतीय : भाषाविज्ञान एवं हिंदी भाषा		
PROGRAMME/CLASS: M.A.	**Year : P.G. Ist Year or UG in Research Fourth Year**	**SEMESTER: II/VIII**
COURSE CODE: 0810103	**COURSE TITLE** भाषा विज्ञान एवं हिंदी भाषा	**Theory**

साहित्य आद्यंत एक भाषिक निर्मिति है। साहित्य के गंभीर अध्ययन के लिए भाषिक व्यवस्था का सुस्पष्ट सर्वांगीण ज्ञान अपरिहार्य है। भाषाविज्ञान भाषा की वस्तुनिष्ठ अध्ययन प्रणाली के रूप में भाषिक इकाइयों तथा भाषा संरचना के विभिन्न स्तरों पर उनके अंतरसंबंधों के विन्यास को आलोकित कर न केवल अध्येता को भाषिक अंतर्दृष्टि देता है अपितु भाषा–विषयक विवेचन के लिए एक निरूपक भाषा भी प्रदान करता है। मूल भाषा व्यवस्था पर आरोपित द्वितीयक साहित्यिक व्यवस्था की भाषिक प्रकृति की स्वीकृति, प्राचीन भारतीय एवं अधुनातन पाश्चात्य साहित्य चिंतन में समान रूप से लक्षणीय है। कहने की आवश्यकता नहीं कि भाषा के साहित्येतर, प्रयोजनमूलक रूपों के अध्ययन में भी भाषा वैज्ञानिक चिंतन का लाभ उतना ही महत्त्वपूर्ण है। भाषा वैज्ञानिक आधार पर हिंदी भाषा का ऐतिहासिक विकासक्रम, भौगोलिक विस्तार, भाषिक स्वरूप, विविधरूपता तथा हिंदी में कंप्यूटर सुविधाओं विषयक जानकारी एवं देवनागरी के वैशिष्ट्य, विकास और मानकीकरण का विवरण हिंदी के अध्येता के लिए अत्यंत उपयोगी है।

CREDITS: 4	**Core Compulsory**	**Max. Marks (Int. + Ext.) 25+75 Total =100 Minimum Marks : 40**

Teaching Hours = Lectures–Tutorials-Practicals (L-T-P) : 4-0-0 (FOUR Hours in a week)

Unit	Topic	No. of Lectures
I	**भाषा और भाषाविज्ञान** : भाषा की परिभाषा और अभिलक्षण, भाषाविज्ञान : स्वरूप एवं व्याप्ति, अध्ययन की दिशाएँ–वर्णनात्मक, ऐतिहासिक, तुलनात्मक, प्रायोगिक, विश्व के भाषा परिवार।	10
II	**स्वन प्रक्रिया** : स्वनविज्ञान का स्वरूप और शाखाएँ, वाग अवयव और उनके कार्य, स्वन की अवधारणा और स्वनों का वर्गीकरण। हिंदी की स्वनिम व्यवस्था–खंड्य, खंड्येतर, स्वन–नियम।	15

	अर्थविज्ञान : अर्थ की अवधारणा, शब्द और अर्थ का संबंध, शब्द भेद, अर्थ परिवर्तन, दिशाएँ एवं कारण।	
III	**हिंदी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि** : प्राचीन भारतीय आर्यभाषाएँ– वैदिक तथा लौकिक संस्कृत और उनकी विशेषताएँ। मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषाएँ–पालि, प्राकृत–शौरसेनी, मागधी, अर्धमागधी, अपभ्रंश और उनकी विशेषताएँ। आधुनिक भारतीय आर्यभाषाएँ और उनका वर्गीकरण, द्रविड़ परिवार की भाषाओं का सामान्य परिचय।	15
IV	**हिंदी का भौगोलिक विस्तार** : हिंदी की उपभाषाएँ, पश्चिमी हिंदी, पूर्वी हिंदी, राजस्थानी, बिहारी तथा पहाड़ी और उनकी बोलियों का सामान्य परिचय। खड़ी बोली, अवधी और ब्रज की ध्वनि और रूप संबंधी विशेषताएँ।	15
V	**देवनागरी लिपि** : विशेषताएँ और मानकीकरण।	05

शिक्षण विधि: व्याख्यान, समूह चर्चा, एसाइनमेंट, ई–कंटेंट इत्यादि।

सतत् आंतरिक मूल्यांकन (25 अंक)–

लिखित परीक्षा (15 अंक) + पाठयेत्तर गतिविधियां (क्विज, असाइनमेंट, पुस्तक समीक्षा, निबंध, रोल प्ले, सेमिनार आदि) (10 अंक)

वाह्य मूल्यांकन (75 अंक)–

निबंधात्मक प्रश्न 3 x 15 = 45

लघु उत्तरीय प्रश्न 2 x 10 = 20

अति लघु उत्तरीय प्रश्न 10 x 1 = 10

कुल योग = 75

नोटः लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य–असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. हिंदी भाषा – कैलाश चंद्र भाटिया
2. भाषा विवेचन – भगीरथ मिश्र

3.	हिंदी–दशा और दिशा	–	प्रभाकर श्रोत्रिय
4.	भाषाविज्ञान कोश	–	डॉ0 भोलानाथ तिवारी
5.	भारतीय भाषाविज्ञान	–	किशोरी दास वाजपेई
6.	हिंदी की वर्तनी तथा शब्द–विश्लेषण	–	डॉ0 भोलानाथ तिवारी
7.	हिंदी भाषा का इतिहास	–	डॉ0 भोलानाथ तिवारी
8.	हिंदी भाषा की संरचना	–	डॉ0 भोलानाथ तिवारी
9.	हिंदी व्याकरण	–	उमेश चंद्र शुक्ल
10.	भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र	–	कपिल देव द्विवेदी
11.	हिंदी भाषा और साहित्य	–	किरनबाला
12.	भाषा विज्ञान	–	डॉ0 भोलानाथ तिवारी
13.	हिंदी भाषा	–	डॉ0 भोलानाथ तिवारी
14.	अर्थ विज्ञान	–	ब्रज मोहन
15.	ऐतिहासिक भाषाविज्ञान और हिंदी	–	राम विलास शर्मा
16.	हिंदी भाषा की संधि संरचना	–	डॉ0 भोलानाथ तिवारी
17.	हिंदी भाषा की सामाजिक संरचना	–	डॉ0 भोलानाथ तिवारी
18.	हिंदी भाषा की ध्वनि संरचना	–	डॉ0 भोलानाथ तिवारी
19.	हिंदी भाषा की लिपि संरचना	–	डॉ0 भोलानाथ तिवारी
20.	हिंदी भाषा	–	कैलाश चंद्र भाटिया
21.	भाषा विवेचन	–	भगीरथ मिश्र
22.	हिंदी–दशा और दिशा	–	प्रभाकर श्रोत्रिय
23.	भाषाविज्ञान कोश	–	डॉ0 भोलानाथ तिवारी
24.	भारतीय भाषाविज्ञान	–	किशोरी दास वाजपेई
25.	हिंदी की वर्तनी तथा शब्द–विश्लेषण	–	डॉ0 भोलानाथ तिवारी
26.	हिंदी भाषा का इतिहास	–	डॉ0 भोलानाथ तिवारी
27.	हिंदी भाषा	–	कैलाश चंद्र भाटिया
28.	भाषा विवेचन	–	भगीरथ मिश्र
29.	हिंदी–दशा और दिशा	–	प्रभाकर श्रोत्रिय
30.	भाषाविज्ञान कोश	–	डॉ0 भोलानाथ तिवारी
31.	भारतीय भाषाविज्ञान	–	किशोरी दास वाजपेई
32.	हिंदी की वर्तनी तथा शब्द–विश्लेषण	–	डॉ0 भोलानाथ तिवारी
33.	हिंदी भाषा का इतिहास	–	डॉ0 भोलानाथ तिवारी
34.	हिंदी भाषा	–	कैलाश चंद्र भाटिया
35.	भाषा विवेचन	–	भगीरथ मिश्र
36.	हिंदी–दशा और दिशा	–	प्रभाकर श्रोत्रिय
37.	भाषाविज्ञान कोश	–	डॉ0 भोलानाथ तिवारी
38.	भारतीय भाषाविज्ञान	–	किशोरी दास वाजपेई

39.	हिंदी की वर्तनी तथा शब्द–विश्लेषण	–	डॉ0 भोलानाथ तिवारी
40.	हिंदी भाषा का इतिहास	–	डॉ0 भोलानाथ तिवारी
41.	हिंदी भाषा	–	कैलाश चंद्र भाटिया
42.	भाषा विवेचन	–	भगीरथ मिश्र
43.	हिंदी–दशा और दिशा	–	प्रभाकर श्रोत्रिय
44.	भाषाविज्ञान कोश	–	डॉ0 भोलानाथ तिवारी
45.	भारतीय भाषाविज्ञान	–	किशोरी दास वाजपेई
46.	हिंदी की वर्तनी तथा शब्द–विश्लेषण	–	डॉ0 भोलानाथ तिवारी
47.	हिंदी भाषा का इतिहास	–	डॉ0 भोलानाथ तिवारी
48.	हिंदी भाषा	–	कैलाश चंद्र भाटिया
49.	भाषा विवेचन	–	भगीरथ मिश्र
50.	हिंदी–दशा और दिशा	–	प्रभाकर श्रोत्रिय
51.	भाषाविज्ञान कोश	–	डॉ0 भोलानाथ तिवारी
52.	भारतीय भाषाविज्ञान	–	किशोरी दास वाजपेई
53.	हिंदी की वर्तनी तथा शब्द–विश्लेषण	–	डॉ0 भोलानाथ तिवारी
54.	हिंदी भाषा का इतिहास	–	डॉ0 भोलानाथ तिवारी
55.	हिंदी भाषा	–	कैलाश चंद्र भाटिया
56.	भाषा विवेचन	–	भगीरथ मिश्र
57.	हिंदी–दशा और दिशा	–	
58.	भाषाविज्ञान कोश	–	डॉ0 भोलानाथ तिवारी
59.	भारतीय भाषाविज्ञान	–	किशोरी दास वाजपेई
60.	हिंदी की वर्तनी तथा शब्द–विश्लेषण	–	डॉ0 भोलानाथ तिवारी
61.	हिंदी भाषा का इतिहास	–	डॉ0 भोलानाथ तिवारी
62.	हिंदी भाषा की संरचना	–	डॉ0 भोलानाथ तिवारी
63.	हिंदी व्याकरण	–	उमेश चंद्र शुक्ल
64.	भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र	–	कपिल देव द्विवेदी
65.	हिंदी भाषा और साहित्य	–	किरनबाला
66.	भाषा विज्ञान	–	डॉ0 भोलानाथ तिवारी
67.	हिंदी भाषा	–	डॉ0 भोलानाथ तिवारी
68.	अर्थ विज्ञान	–	ब्रज मोहन
69.	ऐतिहासिक भाषाविज्ञान और हिंदी	–	राम विलास शर्मा
70.	हिंदी भाषा की संधि संरचना	–	डॉ0 भोलानाथ तिवारी
71.	हिंदी भाषा की सामाजिक संरचना	–	डॉ0 भोलानाथ तिवारी
72.	हिंदी भाषा की ध्वनि संरचना	–	डॉ0 भोलानाथ तिवारी
73.	हिंदी भाषा की लिपि संरचना	–	डॉ0 भोलानाथ तिवारी
74.	हिंदी भाषा की शब्द संरचना	–	डॉ0 भोलानाथ तिवारी

75. अवधी का विकास – बाबूराम सक्सेना
76. देवनागरी लेखन तथा हिंदी वर्तनी व्यवस्था – लक्ष्मी नारायण
77. आधुनिक भाषाविज्ञान – डॉ0 राज मणि शर्मा
78. हिंदी भाषा की रूप संरचना – डॉ0 भोलानाथ तिवारी
79. हिंदी भाषा की वाक्य संरचना – डॉ0 भोलानाथ तिवारी
80. हिंदी भाषा की शब्द संरचना – डॉ0 भोलानाथ तिवारी
81. हिंदी भाषा की आर्थी संरचना – डॉ0 भोलानाथ तिवारी
82. भाषाविज्ञान – प्रो0 नरेश मिश्र
83. हिंदी भाषा में वर्तनी एवं उच्चारण संबंधी त्रुटियाँ एवं उपचार – भंवर लाल नागदा
84. भाषा की उत्पत्ति, रचना और विकास – डॉ0 विनोद मणि दिवाकर
85. भाषा का समाजशास्त्र – राजेंद्र प्रसाद सिंह
86. हिंदी भाषा तथा देवनागरी का इतिहास – ओम प्रकाश शर्मा
87. हिंदी भाषा संदर्भ और संरचना – डॉ0 त्रिलोचन पांडेय
88. भारतीय आर्य भाषा समस्या – रामविलास शर्मा
89. हिंदी और उसकी उपभाषाएँ – विमलेश कांति वर्मा
90. भारत के भाषा परिवार – डॉ0 राजमल बोरा
91. हिंदी भाषा का उद्‌गम और विकास – उदयनारायण तिवारी
92. भाषाविज्ञान और हिंदी भाषा – राजनाथ भट्‌ट
93. नागरी लिपि और हिंदी वर्तनी – डॉ0 अनंत चौधरी
94. हिंदी भाषा के अक्षर तथा शब्द की सीमा – डॉ0 कैलाश चंद्र भाटिया
95. भारतीय भाषाविज्ञान का सामाजिक धरातल – शमशेर सिंह नरूला
96. हिंदी शब्द समूह का विकास – डॉ0 नरेश मिश्र
97. भाषा विभाग की भूमिका – डॉ0 देवेंद्रनाथ शर्मा
98. हिंदी भाषा संरचना के विविध आयाम – रवींद्रनाथ श्रीवास्तव
99. आधुनिक भाषाविज्ञान – डॉ0 राजमणि शर्मा
100. राष्ट्रभाषा हिंदी : समस्याएं और समाधान – आचार्य देवेंद्रनाथ शर्मा
101. भाषा और हिंदी भाषा : वैज्ञानिक और व्यावहारिक संदर्भ – डॉ0 नरेश मिश्र
102. हिंदी मानकीकरण : उच्चारण और लेखन – डॉ0 नरेश मिश्र
103. हिंदी : मानकीकरण और प्रयोग – डॉ0 नरेश मिश्र

पाठ्यक्रम चतुर्थ : भारतीय साहित्य

PROGRAMME/CLASS: M.A.	Year : P.G. 1st Year or UG in Research Fourth Year	SEMESTER: II/VIII
COURSE CODE: 0810104	COURSE TITLE भारतीय साहित्य	Theory

भारतीय भाषाओं में हिंदी साहित्य का स्थान अन्य प्रांतीय भाषाओं की तुलना में अपेक्षाकृत अधिक महत्त्वपूर्ण है, इसलिए हिंदी साहित्याध्ययन को अधिकाधिक गंभीर तथा प्रशस्त बनाना अत्यंत आवश्यक है। एक समेकित भारतीय साहित्य की रूपरचना के लिए हिंदी का भारतीय संदर्भ सर्वथा प्रासंगिक है। इस दृष्टि से हिंदी के स्नातकोत्तर साहित्य की रूपरचना के लिए हिंदी का भारतीय सन्दर्भ सर्वथा प्रासंगिक है। इस दृष्टि से हिंदी के स्नातकोत्तर विद्यार्थियों के लिए भारतीय भाषाओं के साहित्य का ज्ञान अनिवार्य है।

CREDITS: 4	Core Compulsory	Max. Marks (Int. + Ext.) 25+75 Total =100 Minimum Marks : 40

Teaching Hours = Lectures–Tutorials-Practicals (L-T-P) : 4-0-0 (FOUR Hours in a week)

Unit	Topic	No. of Lectures
I	भारतीय साहित्य की परिधि, भारतीय साहित्य में प्रतिबिंबित भारतीय संस्कृति तथा भारतीय साहित्य की मूलभूत एकता।	15
II	'हिंदी और बंगला' साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन।	10
III	मालंच (अनुवाद– नीरजा/फुलवारी)– रवींद्रनाथ ठाकुर (बंगला)	15
IV	हयवदन– गिरीश कर्नाड (कन्नड़)	15
V	द्रुतपाठ कालिदास (संस्कृत), सुब्रह्मण्यम् भारती (तमिल), पी० के० नायर (मलयालम), पाश (पंजाबी), विजय तेंदुलकर (मराठी), नरसी मेहता (गुजराती), पद्मा सचदेव–(डोगरी)	05

शिक्षण विधि: व्याख्यान, समूह चर्चा, एसाइनमेंट, ई–कंटेंट इत्यादि।

सतत् आंतरिक मूल्यांकन (25 अंक)–

लिखित परीक्षा (15 अंक) + पाठयेत्तर गतिविधियां (क्विज, असाइनमेंट, पुस्तक समीक्षा, निबंध, रोल प्ले, सेमिनार आदि) (10 अंक)

वाह्य मूल्यांकन (75 अंक)–

निबंधात्मक प्रश्न	3 x 15 = 45
लघु उत्तरीय प्रश्न	2 x 10 = 20
अति लघु उत्तरीय प्रश्न	10 x 1 = 10
कुल योग	= 75

नोटः लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य–असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. भारतीय साहित्य की सांस्कृतिक रेखाएं – परशुराम चतुर्वेदी
2. आधनिक भारतीय चिंतन – डॉ0 विश्वनाथ नरवणे
3. भारतीय चिंतन परम्परा – के0 दामोदरन
4. भारतीय साहित्य के इतिहास की परंपराएँ – डॉ0 रामविलास शर्मा
5. भारतीय साहित्य – डॉ0 नगेंद्र
6. सूफीमत : साधना और साहित्य – डॉ0 बलदेव उपाध्याय
7. भागवत सम्प्रदाय – डॉ0 बलदेव उपाध्याय

8. भारतीय दर्शन – डॉ0 बलदेव उपाध्याय
9. संस्कृत साहित्य का इतिहास – डॉ0 बलदेव उपाध्याय
10. भारतीय साहित्य – डॉ0 भोला शंकर व्यास
11. भारतीय साहित्य की सांस्कृतिक रेखाएं – परशुराम चतुर्वेदी
12. आधनिक भारतीय चिंतन – डॉ0 विश्वनाथ नरवणे
13. भारतीय चिंतन परम्परा – के0 दामोदरन
14. भारतीय साहित्य के इतिहास की परंपराएँ – डॉ0 रामविलास शर्मा
15. भारतीय साहित्य – डॉ0 नगेंद्र
16. सूफीमत : साधना और साहित्य – डॉ0 बलदेव उपाध्याय
17. भागवत सम्प्रदाय – डॉ0 बलदेव उपाध्याय
18. भारतीय दर्शन – डॉ0 बलदेव उपाध्याय
19. संस्कृत साहित्य का इतिहास – डॉ0 बलदेव उपाध्याय
20. भारतीय साहित्य – डॉ0 भोला शंकर व्यास
21. भारतीय साहित्य की सांस्कृतिक रेखाएं – परशुराम चतुर्वेदी
22. आधनिक भारतीय चिंतन – डॉ0 विश्वनाथ नरवणे
23. भारतीय चिंतन परम्परा – के0 दामोदरन
24. भारतीय साहित्य के इतिहास की परंपराएँ – डॉ0 रामविलास शर्मा
25. भारतीय साहित्य – डॉ0 नगेंद्र
26. सूफीमत : साधना और साहित्य – डॉ0 बलदेव उपाध्याय
27. भागवत सम्प्रदाय – डॉ0 बलदेव उपाध्याय
28. भारतीय दर्शन – डॉ0 बलदेव उपाध्याय
29. संस्कृत साहित्य का इतिहास – डॉ0 बलदेव उपाध्याय
30. भारतीय साहित्य – डॉ0 भोला शंकर व्यास
31. भारतीय चिंतन परम्परा – के0 दामोदरन
32. भारतीय साहित्य के इतिहास की परंपराएँ – डॉ0 रामविलास शर्मा
33. भारतीय साहित्य – डॉ0 नगेंद्र

34. सूफीमत : साधना और साहित्य – डॉ0 बलदेव उपाध्याय
35. भागवत सम्प्रदाय – डॉ0 बलदेव उपाध्याय
36. भारतीय साहित्य की सांस्कृतिक रेखाएं – परशुराम चतुर्वेदी
37. आधनिक भारतीय चिंतन – डॉ0 विश्वनाथ नरवणे
38. भारतीय चिंतन परम्परा – के0 दामोदरन
39. भारतीय साहित्य के इतिहास की परंपराएँ – डॉ0 रामविलास शर्मा
40. भारतीय साहित्य – डॉ0 नगेंद्र
41. सूफीमत : साधना और साहित्य – डॉ0 बलदेव उपाध्याय
42. भागवत सम्प्रदाय – डॉ0 बलदेव उपाध्याय
43. भारतीय दर्शन – डॉ0 बलदेव उपाध्याय
44. संस्कृत साहित्य का इतिहास – डॉ0 बलदेव उपाध्याय
45. भारतीय साहित्य की सांस्कृतिक रेखाएं – परशुराम चतुर्वेदी
46. आधनिक भारतीय चिंतन – डॉ0 विश्वनाथ नरवणे
47. भारतीय चिंतन परम्परा – के0 दामोदरन
48. भारतीय साहित्य के इतिहास की परंपराएँ – डॉ0 रामविलास शर्मा
49. भारतीय साहित्य – डॉ0 नगेंद्र
50. सूफीमत : साधना और साहित्य – डॉ0 बलदेव उपाध्याय
51. भागवत सम्प्रदाय – डॉ0 बलदेव उपाध्याय
52. भारतीय दर्शन – डॉ0 बलदेव उपाध्याय
53. संस्कृत साहित्य का इतिहास – डॉ0 बलदेव उपाध्याय
54. भारतीय साहित्य की सांस्कृतिक रेखाएं – परशुराम चतुर्वेदी
55. भारतीय साहित्य की सांस्कृतिक रेखाएं – परशुराम चतुर्वेदी
56. आधनिक भारतीय चिंतन – डॉ0 विश्वनाथ नरवणे
57. भारतीय चिंतन परम्परा – के0 दामोदरन
58. भारतीय साहित्य के इतिहास की परंपराएँ – डॉ0 रामविलास शर्मा
59. भारतीय साहित्य – डॉ0 नगेंद्र

60.	सूफीमत : साधना और साहित्य	–	डॉ0 बलदेव उपाध्याय
61.	भागवत सम्प्रदाय	–	डॉ0 बलदेव उपाध्याय
62.	भारतीय दर्शन	–	डॉ0 बलदेव उपाध्याय
63.	संस्कृत साहित्य का इतिहास	–	डॉ0 बलदेव उपाध्याय
64.	भारतीय साहित्य	–	डॉ0 भोला शंकर व्यास
65.	भारतीय साहित्य : तुलनात्मक अध्ययन	–	ब्रजेश्वर शर्मा
66.	भारतीय काव्यशास्त्र	–	योगेंद्र प्रताप सिंह
67.	भारतीय साहित्य	–	संपादक नगेंद्र
68.	आज का भारतीय साहित्य	–	साहित्य अकादमी प्रकाशन
69.	साहित्य और संस्कृति	–	अमृतलाल नागर

<table>
<tr><td colspan="3">पाठ्यक्रम पंचम : (क) आत्मकथा व जीवनी साहित्य (वैकल्पिक)</td></tr>
<tr><td>PROGRAMME/CLASS:
M.A.</td><td>Year : P.G. Ist Year or UG in Research Fourth Year</td><td>SEMESTER:
II/VIII</td></tr>
<tr><td>COURSE CODE:
0810105</td><td>COURSE TITLE
(क) आत्मकथा व जीवनी साहित्य</td><td>Theory</td></tr>
<tr><td colspan="3">आत्मकथा व जीवनी, साहित्य की महत्त्वपूर्ण विधाएँ हैं। साहित्यकारों को उनकी ही दृष्टि से समझना, विद्यार्थियों के लिए उत्सुकता के नये द्वार खोलेगा। प्रमुख साहित्यकारों की लेखनी के माध्यम से समाज के लब्धप्रतिष्ठित व्यक्तित्वों को जानना समीचीन है।</td></tr>
<tr><td>CREDITS: 4</td><td>Core Compulsory</td><td>Max. Marks
(Int. + Ext.) 25+75
Total =100
Minimum Marks : 40</td></tr>
<tr><td colspan="3">Teaching Hours = Lectures–Tutorials-Practicals (L-T-P) : 4-0-0 (FOUR Hours in a week)</td></tr>
</table>

Unit	Topic	No. of Lectures
I	आत्मकथा– परिभाषा, प्रकार व विशेषताएँ। हिंदी आत्मकथा साहित्य का उद्भव व विकास।	10
II	जीवनी– परिभाषा व विशेषताएँ। आत्मकथा व जीवनी में अंतर। प्रमुख आत्मकथा व जीवनियाँ।	10
III	अपनी खबर – पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' क्या भूलूँ क्या याद करूँ – हरिवंश राय बच्चन	15
IV	आवारा मसीहा – विष्णु प्रभाकर जिन्होंने जीना जाना – जगदीश चंद्र माथुर	15
V	द्रुतपाठ– गुलाब राय, हरिवंशराय बच्चन, रामदरश मिश्र, रामविलास शर्मा, कमलेश्वर, अमृतराय, भगवती चरण वर्मा।	10

शिक्षण विधि: व्याख्यान, समूह चर्चा, एसाइनमेंट, ई–कंटेंट इत्यादि।

सतत् आंतरिक मूल्यांकन (25 अंक)–

लिखित परीक्षा (15 अंक) + पाठयेत्तर गतिविधियां (क्विज, असाइनमेंट, पुस्तक समीक्षा, निबंध, रोल प्ले, सेमिनार आदि) (10 अंक)

वाह्य मूल्यांकन (75 अंक)–

निबंधात्मक प्रश्न	3 x 15 = 45
लघु उत्तरीय प्रश्न	2 x 10 = 20
अति लघु उत्तरीय प्रश्न	10 x 1 = 10
कुल योग	= 75

नोटः लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य–असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. अपनी खबर – पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र'
2. कहि न जाय का कहिए – भगवतीचरण वर्मा
3. आवारा मसीहा – विष्णु प्रभाकर
4. जिन्होंने जीना जाना – जगदीश चंद्र माथुर
5. फुरसत के दिन – रामदरश मिश्र
6. घर की बात – रामविलास शर्मा
7. जो मैंने जिया – कमलेश्वर
8. कलम का सिपाही – अमृतराय
9. मेरी असफलताएँ – गुलाबराय
10. क्या भूलूँ क्या याद करूँ – हरिवंशराय बच्चन
11. नीड़ का निर्माण फिर – हरिवंशराय बच्चन
12. बसेरे से दूर – हरिवंशराय बच्चन
13. दशद्वार से सोपान तक – हरिवंशराय बच्चन
14. हिंदी का गद्य साहित्य – रामचंद्र तिवारी

15. हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ0 नगेंद्र
16. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य – बेचन
17. मेरी आत्म कहानी – चतुरसेन शास्त्री
18. बाबू जी – शोभाकांत
19. आधुनिक हिंदी का जीवन परक साहित्य – डॉ0 शांति खन्ना
20. हिंदी का आत्मकथा साहित्य – डॉ0 विश्वबंधु

पाठ्यक्रम पंचम : (ख) रेखाचित्र व संस्मरण साहित्य (वैकल्पिक)		
PROGRAMME/CLASS: M.A.	**Year : P.G. Ist Year or UG in Research Fourth Year**	**SEMESTER: II/VIII**
COURSE CODE: 0810106	**COURSE TITLE** (ख) रेखाचित्र व संस्मरण साहित्य	**Theory**
हिंदी में कथा–साहित्य व नाट्य साहित्य से इतर कई विधाएँ हैं, जिनकी विशद जानकारी विद्यार्थियों को होनी अपेक्षित है। विद्यार्थी इस पाठ्यक्रम में इन विधाओं का अध्ययन कर, साहित्य की दो प्रमुख विधाओं के ज्ञान से लाभान्वित हो सकेंगे।		
CREDITS: 4	**Core Compulsory**	**Max. Marks (Int. + Ext.) 25+75 Total =100 Minimum Marks : 40**
Teaching Hours = Lectures–Tutorials-Practicals (L-T-P) : 4-0-0 (FOUR Hours in a week)		

Unit	**Topic**	**No. of Lectures**
I	रेखाचित्र– अर्थ, विशेषता, वर्गीकरण, प्रमुख रेखाचित्र।	10
II	संस्मरण– अर्थ, तत्त्व व विकास–यात्रा। रेखाचित्र व संस्मरण में अंतर, प्रमुख संस्मरण।	15
III	माटी की मूरतें – रामवृक्ष बेनीपुरी रेखाएँ बोल उठीं – देवेंद्र सत्यार्थी	15
IV	स्मृति की रेखाएँ – महादेवी वर्मा जिनके साथ जिया – अमृतलाल नागर	15
V	द्रुतपाठ– श्रीराम शर्मा, कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर', शिव पूजन सहाय, गिरिराज किशोर, प्रकाशचंद्र गुप्त, बनारसी दास चतुर्वेदी।	05

शिक्षण विधि: व्याख्यान, समूह चर्चा, एसाइनमेंट, ई–कंटेंट इत्यादि।

सतत् आंतरिक मूल्यांकन (25 अंक)–

लिखित परीक्षा (15 अंक) + पाठयेत्तर गतिविधियां (क्विज, असाइनमेंट, पुस्तक समीक्षा, निबंध, रोल प्ले, सेमिनार आदि) (10 अंक)

वाह्य मूल्यांकन (75 अंक)–

निबंधात्मक प्रश्न	3 x 15 = 45
लघु उत्तरीय प्रश्न	2 x 10 = 20
अति लघु उत्तरीय प्रश्न	10 x 1 = 10
कुल योग	= 75

नोटः लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य–असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. स्मृति की रेखाएँ – महादेवी वर्मा
2. जिनके साथ जिया – अमृतलाल नागर
3. समय के पाँव – माखनलाल चतुर्वेदी
4. माटी की मूरतें – रामवृक्ष बेनीपुरी
5. रेखाएँ बोल उठीं – देवेंद्र सत्यार्थी
6. ज्यादा अपनी, कम पराई – उपेंद्रनाथ 'अश्क'
7. हिंदी साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास – डॉ0 कृष्णलाल हंस
8. हिंदी का संस्मरण साहित्य – राजरानी शर्मा
9. हिंदी–रेखाचित्र – डॉ0 हरवंशलाल शर्मा
10. संचयिता – महादेवी वर्मा (सं0–डॉ0 निर्मला जैन)

पाठ्यक्रम पंचम : (ग) यात्रा वृत्तांत व रिपोर्ताज (वैकल्पिक)		
PROGRAMME/CLASS: M.A.	**Year : P.G. Ist Year or UG in Research Fourth Year**	**SEMESTER: II/VIII**
COURSE CODE: 0810107	**COURSE TITLE** (ग) यात्रा वृत्तांत व रिपोर्ताज	**Theory**
साहित्य की सब विधाओं का विद्यार्थियों को अपेक्षित ज्ञान प्राप्त हो, इस दिशा में यह पाठ्यक्रम उपयोगी होगा यात्रा वृत्तांत व रिपोर्ताज ऐसी विधाएँ हैं जिनका अध्ययन विद्यार्थियों को अपने देशकाल से अधिक निकटता से जोड़ने में भी सहायक सिद्ध होगा।		
CREDITS: 4	**Core Compulsory**	**Max. Marks (Int. + Ext.) 25+75 Total =100 Minimum Marks : 40**

Teaching Hours = Lectures–Tutorials-Practicals (L-T-P) : 4-0-0 (FOUR Hours in a week)

Unit	Topic	No. of Lectures
I	यात्रा वृत्तांत–स्वरूप व विकास, प्रकार, उद्देश्य।	10
II	रिपोर्ताज– स्वरूप, प्रकार, विशेषताएँ व इतिहास, प्रमुख रिपोर्ताज।	10
III	मेरी तिब्बत यात्रा – राहुल सांकृत्यायन अरे यायावर रहेगा याद – अज्ञेय	15
IV	तूफानों के बीच – रांगेय राघव क्षण बोले कण मुस्काये – कन्हैया लाल मिश्र 'प्रभाकर'	15
V	द्रुतपाठ– धर्मवीर भारती, विवेकी राय, श्रीकांत शर्मा, प्रकाश चंद्र गुप्त, शिवदान सिंह चौहान, शमशेर बहादुर सिंह, यशपाल।	10

शिक्षण विधि: व्याख्यान, समूह चर्चा, एसाइनमेंट, ई–कंटेंट इत्यादि।

सतत् आंतरिक मूल्यांकन (25 अंक)–

लिखित परीक्षा (15 अंक) + पाठयेत्तर गतिविधियां (क्विज, असाइनमेंट, पुस्तक समीक्षा, निबंध, रोल प्ले, सेमिनार आदि) (10 अंक)

वाह्य मूल्यांकन (75 अंक)–

निबंधात्मक प्रश्न	3 x 15 = 45
लघु उत्तरीय प्रश्न	2 x 10 = 20
अति लघु उत्तरीय प्रश्न	10 x 1 = 10
कुल योग	= 75

नोटः लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य–असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. राहुल सांकृत्यायन – डॉ0 कन्हैयालाल सिंह
2. महापंडित राहुल सांकृत्यायन – गुणाकर मुले
3. राहुल का भारत – विष्णु चंद्र शर्मा
4. मेरी तिब्बत यात्रा – राहुल सांस्कृत्यायन
5. आखिरी चट्टान – मोहन राकेश
6. अरे यायावर रहेगा याद – अज्ञेय
7. तूफानों के बीच – रांगेय राघव
8. क्षण बोले कण मुस्काये – कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'
9. एकलव्य के नोट्स – फणीश्वरनाथ 'रेणु'
10. ठेले पर हिमालय – धर्मवीर भारती
11. जुलूस रुका है – विवेकी राय
12. अपोलो का रथ – श्रीकांत शर्मा
13. लोहे की दीवार के दोनों ओर – यशपाल
14. प्लाट का मोर्चा – शमशेर बहादुर सिंह
15. लक्ष्मीपुरा – शिवदान सिंह चौहान

पाठ्यक्रम प्रथम : आधुनिक काव्य (छायावाद पर्यंत)		
PROGRAMME/CLASS: M.A.	**Year : P.G. 2nd Year or UG in Research Fifth Year**	**SEMESTER: III/IX**
COURSE CODE: 0910101	**COURSE TITLE** आधुनिक काव्य (छायावाद पर्यंत)	**Theory**
आधुनिक हिंदी काव्य पुनर्नवा के रूप में नवीन भावभूमि एवं वैचारिक गतिशीलता लेकर अवतरित हुआ। आधुनिकता, इहलौकिकता, विश्वजनीनता एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण इसकी प्रमुख विशेषताएं है। उपेक्षित विषय भी यहाँ सार्थक एवं प्रासंगिक हो गए हैं। उन्नीसवीं शती के उत्तरार्द्ध से अद्यावधि तक की संवेदनाएं, भावनाएं एवं नूतन विचार सारणियाँ इसमें अभिव्यक्त हुई हैं। मुकम्मल मनुष्य इसमें अभिव्यंजित हुआ है। विविध धाराओं में प्रवाहमान आधुनिक हिंदी काव्य प्रेरणा और ऊर्जा का अजस्र स्रोत है। अतः संवेदना तथा ज्ञान क्षितिज के विस्तार के लिए इसका अध्ययन अत्यंत आवश्यक एवं प्रासंगिक है। (इस पाठ्यक्रम में रचनाओं के साथ–साथ, इस समयावधि के रचनाकर्म, उसकी विशिष्टताओं पर व्यापक चर्चा एवं समीक्षा की जानी अपेक्षित है।)		
CREDITS: 4	**Core Compulsory**	**Max. Marks (Int. + Ext.) 25+75 Total =100 Minimum Marks : 40**
Teaching Hours = Lectures–Tutorials-Practicals (L-T-P) : 4-0-0 (FOUR Hours in a week)		

Unit	Topic	No. of Lectures
I	मैथिलीशरण गुप्त – साकेत का नवम सर्ग	15
II	जयंशकर प्रसाद – कामायनी (श्रद्धा सर्ग)	10
III	सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' – राम की शक्ति पूजा	15
IV	सुमित्रानंदन पंत – परिवर्तन, मौन निमंत्रण महादेवी वर्मा – 'यामा' के प्रारंभिक पाँच गीत (मैं नीर भरी दुख की बदली, वे मुस्काते फूल नहीं, निशा को धो देता, पंथ रहने दो अपरिचित, मैं न यह पथ जानती)	15
V	द्रुतपाठ– भारतेंदु हरिश्चंद्र, अयोध्या सिंह उपाध्याय, 'हरिऔध', सुभद्रा कुमारी चौहान, माखनलाल चतुर्वेदी, रामनरेश त्रिपाठी, बालकृष्ण शर्मा नवीन।	05

शिक्षण विधि: व्याख्यान, समूह चर्चा, एसाइनमेंट, ई–कंटेंट इत्यादि।

सतत् आंतरिक मूल्यांकन (25 अंक)–

लिखित परीक्षा (15 अंक) + पाठयेत्तर गतिविधियां (क्विज, असाइनमेंट, पुस्तक समीक्षा, निबंध, रोल प्ले, सेमिनार आदि) (10 अंक)

वाह्य मूल्यांकन (75 अंक)–

निबंधात्मक प्रश्न	3 x 15 = 45
लघु उत्तरीय प्रश्न	2 x 10 = 20
अति लघु उत्तरीय प्रश्न	10 x 1 = 10
कुल योग	= 75

नोटः लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य–असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. निराला – रामविलास शर्मा
2. प्रसाद का पूर्ववर्ती काव्य – उषा मिश्र
3. महाप्राण निराला समग्र मूल्यांकन – वीरेंद्र सिंह
4. कामायनी रूपक – डॉ0 विनय
5. महाप्राण निराला – गंगाप्रसाद पांडेय
6. छायावादी काव्य : कुछ नए संदर्भ – डॉ0 मृदुला जुगरान
7. प्रसाद निराला और पंत : छायावाद और उसकी वृहत्त्रयी – विजय बहादुर सिंह
8. साकेत विचार और विश्लेषण – डॉ0 वचन देव कुमार
9. जयंशकर प्रसाद – डॉ0 नंद दुलारे वाजपेयी
10. प्रसाद और उनका साहित्य – विनोद शंकर व्यास
11. प्रसाद का काव्य – डॉ0 प्रेमशंकर
12. निराला की साहित्य साधना भाग 1, 2, 3, 4 – डॉ0 रामविलास शर्मा

13. क्रांतिकारी कवि निराला – डॉ0 बच्चन सिंह
14. नवजागरण और छायावाद – डॉ0 महेंद्रनाथ राय
15. महाकवि निराला – डॉ0 नंद दुलारे वाजपेयी
16. साकेत एक अध्ययन – डॉ0 नगेंद्र
17. नवम् सर्ग का काव्य वैभव – कन्हैयालाल सहल
18. कामायनी के अध्ययन की समस्याएं – डॉ0 नगेंद्र
19. छायावाद की प्रासंगिकता – रमेश चंद्र शाह
20. सुमित्रानंदन पंत – डॉ0 नगेंद्र
21. भारतेंदु ग्रंथावली – ना0 प्र0 सभा काशी
22. भारतेंदु और उनके सहयोगी – डॉ0 किशोरी लाल गुप्त
23. भारतेंदु हरिश्चंद्र – डॉ0 रामविलास शर्मा
24. निराला आत्महंता आस्था – दूधनाथ सिंह
25. पंत, प्रसाद और मैथिलीशरण – रामधारी सिंह दिनकर
26. क्रांति कवि निराला – बच्चन सिंह
27. छायावाद – नामवर सिंह
28. प्रसाद, निराला, अज्ञेय – रामस्वरूप चतुर्वेदी
29. आधुनिक कविता के बदलते प्रतिमान – डॉ0 श्रीनिवास पांडेय
30. नवजागरण और छायावाद – डॉ0 महेंद्रनाथ राय
31. साहित्य और समय – अवधेश प्रधान
32. हिंदी साहित्य बीसवी शताब्दी – नंद दुलारे वाजपेयी
33. महादेवी संचयिता – निर्मला जैन (संपा)
34. आज के लोकप्रिय कवि बाल कृष्ण शर्मा नवीन – भवानी प्रसाद मिश्र
35. कामायनी एक पुनर्विचार – गजानन माधव मुक्तिबोध
36. महादेवी वर्मा – जगदीश गुप्त
37. नवीन और उनका काव्य – जगदीश प्रसाद श्रीवास्तव

पाठ्यक्रम द्वितीय : भारतीय काव्यशास्त्र		
PROGRAMME/CLASS: M.A.	**Year : P.G. 2nd Year or UG in Research Fifth Year**	**SEMESTER:** III/IX
COURSE CODE: 0910102	**COURSE TITLE** भारतीय काव्यशास्त्र	**Theory**
रचना के वैशिष्ट्य और मूल्यबोध के उद्घाटन के लिए काव्यशास्त्र का ज्ञान अपरिहार्य है। इनसे साहित्यिक समझ विकसित होती है। वह दृष्टि मिलती है, जिसके आधार पर साहित्य के मर्म और मूल्यवत्ता की वास्तविकता परखी जा सके। सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश के साथ रचना का आस्वाद प्राप्त करने, रचना को उसकी समग्रता में समझने और जानने–परखने के लिए भारतीय काव्यशास्त्र का अध्ययन समीचीन है।		
CREDITS: 4	**Core Compulsory**	**Max. Marks (Int. + Ext.) 25+75 Total =100 Minimum Marks : 40**
Teaching Hours = Lectures–Tutorials-Practicals (L-T-P) : 4-0-0 (FOUR Hours in a week)		

Unit	**Topic**	**No. of Lectures**
I	काव्य लक्षण, काव्य हेतु, काव्य प्रयोजन।	10
II	अलंकार सिद्धांत– अलंकार की अवधारणा, अलंकार सिद्धांत की प्रमुख स्थापनाएँ। रीति सिद्धांत – रीति की अवधारणा, रीति सिद्धांत की प्रमुख स्थापनाएँ। वक्रोक्ति सिद्धांत– वक्रोक्ति की अवधारणा, वक्रोक्ति सिद्धांत की प्रमुख स्थापनाएँ।	18
III	रस सिद्धांत, रस का स्वरूप, रस निष्पत्ति, साधारणीकरण।	12
IV	ध्वनि सिद्धांत–ध्वनि का स्वरूप, ध्वनि सिद्धांत की प्रमुख स्थापनाएँ।	10
V	औचित्य सिद्धांत– औचित्य की अवधारणा, औचित्य सिद्धांत की प्रमुख स्थानाएँ।	10

शिक्षण विधि: व्याख्यान, समूह चर्चा, एसाइनमेंट, ई–कंटेंट इत्यादि।

सतत् आंतरिक मूल्यांकन (25 अंक)–

लिखित परीक्षा (15 अंक) + पाठयेत्तर गतिविधियां (क्विज, असाइनमेंट, पुस्तक समीक्षा, निबंध, रोल प्ले, सेमिनार आदि) (10 अंक)

वाह्य मूल्यांकन (75 अंक)–

निबंधात्मक प्रश्न	3 x 15	= 45
लघु उत्तरीय प्रश्न	2 x 10	= 20
अति लघु उत्तरीय प्रश्न	10 x 1	= 10
कुल योग		= 75

नोटः लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य–असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. भारतीय काव्य विमर्श – राममूर्ति त्रिपाठी
2. हिंदी साहित्य कोश (प्रथम खंड) – संपादक धीरेंद्र वर्मा
3. रस सिद्धांत – डॉ0 नगेंद्र
4. काव्यशास्त्र की रूपरेखा – डॉ0 रामदत्त भारद्वाज
5. काव्य दर्पण – डॉ0 जगदीश प्रसाद कौशिक
6. भारतीय काव्यशास्त्र के प्रतिमान – डॉ0 जगदीश प्रसाद कौशिक
7. रस सिद्धांत के विविध आयाम – संपादक आनंद प्रकाश दीक्षित
8. भारतीय काव्यशास्त्र – रामानंद शर्मा
9. अर्द्धशती का भारतीय काव्य चिंतन : पक्ष और विपक्ष – राममूर्ति त्रिपाठी
10. अलंकार दर्पण – डॉ0 नरेश मिश्र
11. भारतीय काव्य सिद्धांत – डॉ0 भगीरथ मिश्र
12. रस मीमांसा – रामचंद्र शुक्ल
13. रस सिद्धांत : स्वरूप विश्लेषण – डॉ0 आनंद प्रकाश दीक्षित
14. काव्यालोक – राम दहिन मिश्र

15. ध्वनि संप्रदाय और उसके सिद्धांत – डॉ0 भोलाशंकर व्यास
16. औचित्य मीमांसा – राममूर्ति त्रिपाठी
17. अलंकार मुक्तावली – देवेंद्र नाथ शर्मा
18. रीति विज्ञान – विद्यानिवास मिश्र
19. शैली विज्ञान और आलोचना की नई भूमिका – रवींद्र नाथ श्रीवास्तव
20. भारतीय काव्यशास्त्र की भूमिका – डॉ0 नगेंद्र
21. भारतीय काव्यशास्त्र के नये क्षितिज – राममूर्ति त्रिपाठी
22. साहित्यशास्त्र – देश पांडेय
23. भारतीय काव्य विमर्श – राममूर्ति त्रिपाठी
24. साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका – मैनेजर पांडेय
25. रामविलास शर्मा के समीक्षा सिद्धांत – डॉ0 मायाप्रसाद
26. संस्कृत काव्यशास्त्र का इतिहास – पी0 वी0 काणे
27. भारतीय काव्यशास्त्र – सत्यदेव चौधरी
28. ध्वन्यालोकलोचन – जगन्नाथ पाठक

पाठ्यक्रम तृतीयः मीडिया लेखन व व्यावहारिक पत्रकारिता		
PROGRAMME/CLASS: M.A.	**Year : P.G. 2nd Year or UG in Research Fifth Year**	**SEMESTER: III/IX**
COURSE CODE: 0910103	**COURSE TITLE** मीडिया लेखन व व्यावहारिक पत्रकारिता	**Theory**
मीडिया लेखन का संबंध सीधा समाज और समाज की गतिविधियों व समस्याओं से है। वर्तमान युग सूचना का युग है, ऐसे में विद्यार्थियों को बदलते परिवेश में मीडिया को समझने हेतु मीडिया और व्यावहारिक पत्रकारिता को भिन्न दृष्टिकोण से जानने की आवश्यकता है।		
CREDITS: 4	**Core Compulsory**	**Max. Marks (Int. + Ext.) 25+75 Total =100 Minimum Marks : 40**
Teaching Hours = Lectures-Tutorials-Practicals (L-T-P) : 4-0-0 (FOUR Hours in a week)		

Unit	Topic	No. of Lectures
I	प्रिंट मीडिया में हिंदी । हिंदी के प्रमुख समाचार पत्र–पत्रिकाएं और उनका बदलता स्वरूप। संपादक के गुण व दायित्व, संपादन कला के सिद्धांत– शीर्षकीकरण, पृष्ठ विन्यास, विभिन्न स्तंभों की योजना व सावधानियां ।	15
II	दृश्य सामग्री– कार्टून, रेखाचित्र, ग्राफिक्स की योजना। पत्रकारिता से संबंधित लेखन– संपादकीय, फीचर, फीचर के प्रकार, फीचर और कहानी में अंतर, साक्षात्कार। खोजी पत्रकारिता का अर्थ, महत्त्व और भूमिका । स्टिंग ऑपरेशन और नैतिकता।	15
III	इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में हिंदी। ऑनलाइन व सोशल मीडिया में हिंदी।	10
IV	मीडिया शब्दावली : बीट, इंट्रो, कवर स्टोरी, स्कूप, ई–एडीशन, ई–पेपर, कैप्शन, कैरी ओवर, डैडलाईन, उमी, मग शाट, राइट अप, स्ट्रिंगर।	10
V	जनसंपर्क/विज्ञापन के क्षेत्र का महत्त्व, जनसंपर्क और विज्ञापन में संबंध। विज्ञापनों की भाषा और प्रकार।	10

शिक्षण विधिः व्याख्यान, समूह चर्चा, एसाइनमेंट, ई–कंटेंट इत्यादि।

सतत् आंतरिक मूल्यांकन (25 अंक)–

लिखित परीक्षा (15 अंक) + पाठयेत्तर गतिविधियां (क्विज, असाइनमेंट, पुस्तक समीक्षा, निबंध, रोल प्ले, सेमिनार आदि) (10 अंक)

वाह्य मूल्यांकन (75 अंक)–

निबंधात्मक प्रश्न	3 x 15 = 45
लघु उत्तरीय प्रश्न	2 x 10 = 20
अति लघु उत्तरीय प्रश्न	10 x 1 = 10
कुल योग	= 75

नोटः लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य–असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. हिंदी पत्रकारिता के विविध आयाम – वेद प्रताप वैदिक
2. हिंदी विज्ञापन की भाषा – आशा पांडेय
3. समाचार संकलन और लेखन – नंद किशोर त्रिखा
4. इलैक्ट्रानिक मीडिया लेखन – रमेश जैन
5. फीचर लेखन : स्वरूप और शिल्प – मनोहर प्रभाकर
6. जनसंचार माध्यमों में हिंदी – चंद्र कुमार
7. हिंदी पत्रकारिता – कृष्ण बिहारी मिश्र
8. जनसंचार पत्रकारिता – अर्जुन तिवारी
9. समाचार पत्र कला – अंविका प्रसाद वाजपेयी
10. मीडिया, शासन और बाजार – अरविंद मोहन
11. चौथे स्तंभ की चुनौतियाँ – चंद्रत्रिखा, लालचंद, गुप्त
12. मीडिया विमर्श – रामशरण जोशी
13. पत्रकारिता : मिशन से मीडिया तक – अखिलेश मिश्र
14. मीडिया की परख – सुधीश पचौरी

पाठ्यक्रम चतुर्थ : विशिष्ट रचनाकार (वैकल्पिक)

PROGRAMME/CLASS: M.A.	Year : P.G. 2nd Year or UG in Research Fifth Year	SEMESTER: III/IX
COURSE CODE:	COURSE TITLE विशिष्ट रचनाकार (कोई एक विकल्प)	Theory

हिंदी के उन कालजयी रचनाकारों का अध्ययन करना आवश्यक है, जिन्होंने चिंतन और सर्जन के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान दिया है और जिनका लेखन आज भी प्रासंगिक है। अतः इन रचनाकारों को साहित्यिक दृष्टि को समझना आवश्यक है।

CREDITS: 4	Core Compulsory	Max. Marks (Int. + Ext.) 25+75 Total =100 Minimum Marks : 40
Teaching Hours = Lectures–Tutorials-Practicals (L-T-P) : 4-0-0 (FOUR Hours in a week)		

(क) कबीरदास Course Code : 0910104

पाठ्य ग्रंथ : कबीर–हजारी प्रसाद द्विवेदी

सबद/साखी क्रम सं0 160 से 209 तक

साहायक ग्रंथ :

1. कबीर ग्रंथावली – सं0 डॉ0 श्याम सुंदर दास।
2. कबीर दर्शन– रामजीलाल सहायक।
3. एक नई दृष्टि– डॉ0 रघुवंश।
4. कबीर का रहस्यवाद – आचार्य परशुराम चतुर्वेदी।
5. हिंदी संत काव्यों में परंपरा और प्रयोग– डॉ0 भगवान देव पांडेय।
6. कबीर एक अनुशीलन– डॉ0 रामकुमार वर्मा।
7. कबिरा खड़ा बाजार में– भीष्म साहनी।
8. कबीर का रहस्यवाद– रामकुमार वर्मा।

9. कबीर– सं0 विजयेंद्र स्नातक।

(ख) सूरदास **Course Code : 0910105**

पाठ्य ग्रंथ : सूरसागर– सार (संपूर्ण) – सं0 डॉ0 धीरेंद्र नवीन संस्करण।

विनय तथा भक्ति (पद संख्या :– 1, 2, 3, 4, 5, 7, 10, 13, 17, 18, 21, 22, 23, 25, 29)

गोकुल लीला (पद संख्या :– 1, 2, 5, 7, 8, 12, 18, 19, 21, 22, 23, 33, 35, 44, 60)

वृंदावन लीला (पद संख्या :– 1, 3, 4, 8, 9, 10, 11, 12, 13, 14)

राधा–कृष्ण (पद संख्या :– 1, 2, 7, 8, 9, 10, 11, 14, 23, 24)

उद्धव–संदेश (पद संख्या :– 55, 62, 65, 66, 77, 82, 91, 95, 101, 102, 104, 108, 110, 118, 125)

सहायक ग्रंथ :–

1. सूरदास– आचार्य रामचंद्र शुक्ल।
2. सूर–साहित्य– आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी।
3. अष्टछाप और वल्लभ संप्रदाय– डॉ0 दीनदयाल गुप्ता।
4. सूर और उनका साहित्य–डॉ0 हरिवंश लाल शर्मा।
5. हिंदी सगुण काव्य की सांस्कृतिक भूमिका–डॉ0 रामनरेश वर्मा।
6. सूरदास और कृष्ण भक्ति काव्य–डॉ0 मैनेजर पांडेय।
7. सूरदास– नंददुलारे वाजपेयी।
8. हिंदी कृष्णभक्ति साहित्य–मधुर भाव की उपासना–प्रो0 पूर्णमासी राय।
9. मीरा का काव्य – डॉ0 विश्वनाथ त्रिपाठी।
10. मीराबाई – डॉ0 श्रीकृष्ण लाल।
11. भक्ति आंदोलन और सूरदास का काव्य–मैनेजर पांडेय।

(ग) गोस्वामी तुलसीदास **Course Code : 0910106**

पाठ्य ग्रंथ :

1. रामचरित मानस (बाल कांड– दोहा क्रम सं0 1 से दोहा क्रम सं0 18 तक समस्त छंद)
2. कवितावली– (उत्तर खंड– छंद क्रम सं0 151 से 170 तक)
3. विनय पत्रिका–चुने हुए कुल **30** पद (पद संख्या :– 1, 4, 17, 30, 36, 41, 45, 73, 76, 79, 85, 88, 90, 100, 102, 104, 105, 111, 114, 115, 121, 155, 159, 162, 166, 172, 174, 185, 198, 201)।

सहायक ग्रंथ :–

1. गोस्वामी तुलसीदास – आचार्य रामचंद्र शुक्ल।
2. तुलसीदास– डॉ0 माताप्रसाद गुप्त।
3. मानस दर्शन–डॉ0 श्रीकृष्णलाल।
4. तुलसी और उनका युग– डॉ0 राजपति दीक्षित।
5. तुलसी की जीवन भूमि–चंद्रवलि पांडेय।
6. रामकथा का विकास–कामिल बुल्के हिंदी परिषद्, प्रयाग
7. मानस की रूसी भूमिका (हिंदी अनुवाद)– वारन्निकोव, विद्यामंदिर, लखनऊ।
8. संत तुलसीदास और उनका संदेश–डॉ0 राजपति दीक्षित।
9. गोस्वामी तुलसीदास की दृष्टि में नारी और उसका महत्त्व–डॉ0 ज्ञानवती त्रिवेदी।
10. लोकवादी तुलसी–डॉ0 विश्वनाथ त्रिपाठी।
11. तुलसीदास–ग्रियर्सन।
12. तुलसी–उदयभानु सिंह
13. तुलसी सन्दर्भ–डॉ0 नगेंद्र

(घ) जयशंकर प्रसाद **Course Code : 0910107**

पाठ्य ग्रंथ :

1. कामायनी (संपूर्ण)
2. ध्रुवस्वामिनी
3. कहानी : आकाशदीप, गुंडा।
4. काव्य कला तथा छायावाद और यथार्थ (प्रथम निबंध और अंतिम निबंध)

सहायक ग्रंथ :–

1. जयशंकर प्रसाद–आचार्य नंददुलारे वाजपेयी।
2. नया साहित्य : नये प्रश्न – आचार्य नंददुलारे वाजपेयी।
3. जयशंकर प्रसाद : वस्तु और कला – डॉ0 रामेश्वर खंडेलवाल।
4. प्रसाद और उनका साहित्य – विनोद शंकर व्यास।
5. प्रसाद का काव्य – डॉ0 प्रेमशंकर।
6. प्रसाद के नाटकों का शास्त्रीय अध्ययन– डॉ0 जगन्नाथ प्रसाद शर्मा।
7. प्रसाद के जीवन और साहित्य– डॉ0 रामरतन भटनागर।
8. हिंदी नाटक– डॉ0 बच्चन सिंह।
9. प्रसाद का गद्य साहित्य– डॉ0 राजमणि शर्मा।
10. प्रसाद : दुखांत नाटक– रामकृष्ण शुक्ल श्रीमुख।
11. नाटक के रंगमंचीय प्रतिमान– डॉ0 वशिष्ठनागर त्रिपाठी।
12. प्रसाद साहित्य में अतीत चिंतन– डॉ0 वशिष्ठ नागर त्रिपाठी।
13. प्रसाद साहित्य में अतीत चिंतन– डॉ0 धर्मपाल कपूर।

14. कामायनी का पुनर्मूल्यांकन– रामस्वरूप चतुर्वेदी।
15. प्रसाद साहित्य सर्जना के आयाम– माधुरी सुबोध (संपादक)
16. प्रसाद संदर्भ– प्रमिला शर्मा (संपादक)

(ङ.) **प्रेमचन्द** **Course Code : 0910108**

पाठ्य ग्रंथ : (क) रंगभूमि (ख) निर्मला (ग) मानसरोवर (खंड एक)

सहायक ग्रंथ

1. प्रेमचंद : घर में– शिवरानी देवी।
2. प्रेमचंद : एक विवेचन – इंद्रनाथ मदान।
3. प्रेमचंद और उनका युग – रामविलास शर्मा।
4. प्रेमचंद : कलम का सिपाही – अमृतराय।
5. प्रेमचंद – मदनगोपाल।
6. प्रेमचंद : जीवन, कला एवं कृतित्व – हंसराज रहबर।
7. प्रेमचंद : साहित्य विवेचन – नंददुलारे वाजपेयी।
8. कथाकार प्रेमचंद– मन्मथनाथ गुप्त।
9. प्रेमचंद : एक अध्ययन– राजेश्वर गुरू।
10. प्रेमचंद की उपन्यास कला– जनार्दन प्रसाद राय।
11. प्रेमचंद एवं भारतीय किसान –रामवृक्ष।
12. प्रेमचंद : गंगा प्रसाद विमल।
13. प्रेमचंद के साहित्य सिद्धांत–नरेन्द्र कोहली।
14. प्रेमचंद : एक कला व्यक्तित्व–जैनेंद्र।
15. प्रेमचंद स्मृति –सं० अमृतराय।
16. प्रेमचंद : चिंतन और कला– सं० इंद्रनाथ मदान।
17. प्रेमचंद और गोर्की– श्री मधु।
18. हिंदी उपन्यास : विशेषतः प्रेमचंद : नलिन विलोचन शर्मा।

(च) **सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'** **Course Code : 0910109**

पाठ्य ग्रंथ : 1 शेखर एक जीवनी (भाग 1, 2), 2 आंगन के पार द्वार, 3 कहानियाँ– जयदोल, परंपरा।

सहायक ग्रंथ :–

1. अज्ञेय का कथा साहित्य– ओम प्रभाकर।
2. अज्ञेय के उपन्यासों की शिल्पविधि–सत्यपाल चुघ।
3. अज्ञेय और आधुनिक रचना की समस्या– रामस्वरूप चतुर्वेदी।
4. शिखर से सागर तक– डॉ० रामकमल राय।

5. अज्ञेय और नयी कविता– डॉ0 चंद्रकला त्रिपाठी।
6. अज्ञेय की काव्य चेतना के आयाम– डॉ0 नवीन चंद्र लोहनी।
7. अज्ञेय कवि और काव्य–डॉ0 राजेंद्र प्रसाद
8. अज्ञेय का कवि कर्म–कृष्णदत्त पालीवाल
9. अज्ञेय का काव्य भाव और शिल्प– डॉ0 शंकर बसंत मुद्गल
10. आज के लोकप्रिय कवि अज्ञेय– विद्यानिवास मिश्र
11. अज्ञेय एक अध्ययन– भोला भाई पटेल
12. अज्ञेय गद्य रचना के विविध आयाम – डॉ0 पुष्पा शर्मा

(छ) गजानन माधव 'मुक्तिबोध' Course Code : 0910110

पाठ्य ग्रंथ :

1. कविताएँ– ओ कलाकार, पथ के दीपक, मृत्यु और कवि, चाँद का मुँह टेढ़ा है, आत्मा के मित्र मेरे, चम्बल की घाटी में।
2. उपन्यास– विपात्र
3. कहानियाँ– खलील काका, मैत्री की माँग, पक्षी और दीमक, काठ का सपना, ब्रह्मराक्षस का शिष्य, विद्रूप।
4. आलोचनात्मक लेख–
   व्यक्तिगत ईमानदारी और कला, प्रगतिवाद एक दृष्टि, समाज और साहित्य, संवेदना का आदर्शीकरण, छायावाद और नयी कविता, साहित्य में जीवन की पुनर्रचना।

सहायक ग्रंथ :

1. कविता के नये प्रतिमान– नामवर सिंह
2. संवाद और एकालाप–मलयज
3. मलयज की डायरी– सं0: नामवर सिंह
4. बीसवीं शताब्दी का हिंदी साहित्य : विजयमोहन सिंह
5. कामायनी : एक पुनर्विचार–मुक्तिबोध
6. मुक्तिबोध की कविताई–अशोक चक्रधर
7. छत्तीसगढ़ में मुक्तिबोध–सं0: राजेंद्र मिश्र
8. मुक्तिबोध: कविता और जीवन–विवेक–चंद्रकांत देवताले।
9. मेरे युवजन मेरे परिजन–सं0: रमेश गजानन मुक्तिबोध, अशोक वाजपेयी
10. मुक्तिबोध : ज्ञान और संवेदना– नंदकिशोर नवल
11. नयी कविता और अस्तित्ववाद– रामविलास शर्मा
12. मुक्तिबोध साहित्य की नयी प्रवृत्तियाँ–दूधनाथ सिंह
13. कथा समय–विजयमोहन सिंह

शिक्षण विधि: व्याख्यान, समूह चर्चा, एसाइनमेंट, ई–कंटेंट इत्यादि।

सतत् आंतरिक मूल्यांकन (25 अंक)–

लिखित परीक्षा (15 अंक) + पाठयेत्तर गतिविधियां (क्विज, असाइनमेंट, पुस्तक समीक्षा, निबंध, रोल प्ले, सेमिनार आदि) (10 अंक)

वाहय मूल्यांकन (75 अंक)–

निबंधात्मक प्रश्न	3 x 15	= 45
लघु उत्तरीय प्रश्न	2 x 10	= 20
अति लघु उत्तरीय प्रश्न	10 x 1	= 10
कुल योग		= 75

नोटः लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य–असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. भक्ति आंदोलन और सूरदास का काव्य – मैनेजर पांडेय
2. महाकवि सूरदास – आचार्य नंद दुलारे वाजपेयी
3. प्रसाद संदर्भ – संपादकः प्रमिला शर्मा
4. प्रसाद साहित्य : सर्जना के आयाम – संपादकः माधुरी सुबोध
5. गोस्वामी तुलसीदास – संपादकः रामचंद्र शुक्ल
6. तुलसीदास – डॉ0 माताप्रसाद गुप्त
7. तुलसी और उनका युग – डॉ0 राजपति दीक्षित
8. तुलसी संदर्भ – डॉ0 नगेंद्र
9. तुलसी – उदय भानु सिंह
10. जयशंकर प्रसाद – नंद दुलारे वाजपेयी
11. कामायनी का पुनर्मूल्यांकन – रामस्वरूप चतुर्वेदी
12. अज्ञेय कवि और काव्य – राजेंद्र प्रसाद
13. अज्ञेय की काव्य चेतना के आयाम – प्रो0 नवीन चंद्र लोहनी
14. अज्ञेय के उपन्यासों की शिल्प विधि – डॉ0 सत्यपाल

15. अज्ञेय का काव्य –भाव एवं शिल्प – डॉ० शंकर बसंत मुद्गल
16. आज के लोकप्रिय हिंदी कवि: अज्ञेय – विद्यानिवास मिश्र
17. अज्ञेय : एक अध्ययन – भोला भाई पटेल
18. अज्ञेय गद्य रचना के विविध आयाम – डॉ० पुष्पा शर्मा
19. मुक्तिबोध साहित्य की नई प्रवृत्तियाँ – दूधनाथ सिंह
20. कबीर – आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
21. नदी के द्वीप में वैयक्तिक स्वच्छंदतावाद – आशा अरोरा
22. हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास – रामस्वरूप चतुर्वेदी
23. प्रसाद साहित्य में अतीत चिंतन – डॉ० धर्मपाल कपूर
24. मुक्तिबोध की कविताई – अशोक चक्रधर

पाठ्यक्रम प्रथम : छायावादोत्तर काव्य		
PROGRAMME/CLASS: M.A.	**Year : P.G. 2nd Year or UG in Research Fifth Year**	**SEMESTER:** IV/X
COURSE CODE: 1010101	**COURSE TITLE** छायावादोत्तर काव्य	**Theory**

छायावादी कृतित्व में यथार्थ और स्वप्न दोनों की समान संस्थिति थी। राष्ट्रीय–चेतना और सांस्कृतिक जागरण की प्रवृत्ति अपनी समस्त शक्ति–सामर्थ्य तथा कतिपय नवीन प्रयोगवादिता के साथ छायावादोत्तर–काव्य में विकसित होती रही। यहाँ प्रयोग और प्रगतिशीलता के स्वर जोर पकड़ते गए जिसके बीज–बिंदु छायावाद में पड़ चुके थे। औद्योगीकरण के साथ–साथ शोषण की वृत्ति तथा अन्य सामाजिक विद्रूपताओं ने प्रगतिशील साहित्यांदोलनों को बढ़ावा दिया। नये मार्ग की अन्वेषी विचारधारा ने प्रयोगवादी काव्यधारा के रूप में अपने को विकसित किया। स्वतंत्रता के बाद मोहभंग की स्थिति ने जन्म लिया। स्वप्न अधूरे रहे, संकल्प टूटे, आक्रोश और विद्रोह की प्रवृत्ति व्यापक पैमाने पर परिलक्षित हुई। विज्ञान ने बौद्धिकता का विकास किया, फलस्वरूप नये–नये बिंब, प्रतीक एवं अभिव्यंजना–रूप विकसित हुए। अंतर्विरोधी स्थितियों ने मूल्य–विघटन, तनाव–संक्रमण, मोहभंग की स्थिति पैदा की, जिसकी अभिव्यंजना विविध रूपों में हुई। वर्तमान समस्याओं, संवेदनाओं की व्यापकता विश्वजनीन हो गई है। इस वैश्विक–संदर्भ की जानकारी और समझदारी के लिए छायावादोत्तर तथा समकालीन साहित्य का विशेष अध्ययन परमावश्यक है।

(इस पाठ्यक्रम में रचनाओं के साथ–साथ, इस समयावधि के रचनाकर्म, उसकी विशिष्टताओं पर व्यापक चर्चा एवं समीक्षा की जानी अपेक्षित है।)

CREDITS: 4	**Core Compulsory**	**Max. Marks (Int. + Ext.) 25+75 Total =100 Minimum Marks : 40**

Teaching Hours = Lectures–Tutorials-Practicals (L-T-P) : 4-0-0 (FOUR Hours in a week)

Unit	Topic	No. of Lectures
I	छायावादोत्तर कालावधि– राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना का काव्य, व्यक्तिवादी काव्य, हालावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता, समकालीन कविता, नवगीत, अकविता, जनवाद, उत्तर आधुनिकतावाद।	15
II	प्रमुख कवि तथा उनकी काव्य प्रवृत्तियाँ। युगबोध एवं शिल्प के नये आयाम।	10
III	अज्ञेय– असाध्य वीणा, कलगी बाजरे की, हरी घास पर क्षण भर। मुक्तिबोध– अंधेरे में।	15
IV	नागार्जुन– कालिदास, बहुत दिनों के बाद, गुलाबी चूड़ियाँ । भवानी प्रसाद मिश्र– गीत फरोश, सतपुड़ा के जंगल। शमशेर बहादुर सिंह– अमन का राग, सागर तट।	15
V	द्रुतपाठ– सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, केदारनाथ अग्रवाल, रघुवीर सहाय, सुदामा पांडेय 'धूमिल', दुष्यंत कुमार धर्मवीर भारती, भारत भूषण, लीलाधर जगूड़ी, कुँअर बेचैन।	05

शिक्षण विधि: व्याख्यान, समूह चर्चा, एसाइनमेंट, ई–कंटेंट इत्यादि।

सतत् आंतरिक मूल्यांकन (25 अंक)–

लिखित परीक्षा (15 अंक) + पाठयेत्तर गतिविधियां (क्विज, असाइनमेंट, पुस्तक समीक्षा, निबंध, रोल प्ले, सेमिनार आदि) (10 अंक)

वाहय मूल्यांकन (75 अंक)–

निबंधात्मक प्रश्न	3 x 15 = 45
लघु उत्तरीय प्रश्न	2 x 10 = 20
अति लघु उत्तरीय प्रश्न	10 x 1 = 10
कुल योग	= 75

नोटः लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य–असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. रघुवीर सहाय का कविकर्म – डॉ0 सुरेश शर्मा
2. धूमिल और उनका काव्य संघर्ष – डॉ0 ब्रह्मदेव मिश्र
3. आज के लोकप्रिय हिंदी कवि नागार्जुन – संपादक प्रभाकर माचवे
4. नयी कविता की मानक कृतियाँ – जीवन प्रकाश जोशी
5. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी मिथक काव्यः युगीन संदर्भ – सविता गौड़
6. मार्क्सवाद और काव्य – शिव कुमार मिश्र
7. तार सप्तक के कवियों की समाज–चेतना – राजेंद्र कुमार
8. नागार्जुन – सुरेश चंद्र त्यागी (संपादक)
9. नई कविता का आत्म संघर्ष – मुक्तिबोध
10. आधुनिक कवियों की दार्शनिक पृष्ठभूमि – डॉ0 राजाराम सोनी
11. नयी कविता पुराख्यान और समकालीनता – डॉ0 एस0 ए0 सूर्य नारायण वर्मा

12.	समकालीन कविता के सरोकर	–	डॉ0 गुरुचरण सिंह
13.	समकालीन हिंदी कविता और लीलाधर जगूड़ी	–	डॉ0 शर्मिला सक्सेना
14.	नागार्जुन का काव्य : एक पड़ताल	–	श्री भगवान तिवारी
15.	कविता की नयी अवधारणा	–	डॉ0 राजेंद्र मिश्र
16.	हिंदी की प्रगतिशील कविता स्वरूप और प्रतिमान	–	डॉ0 मृत्युंजय उपाध्याय
17.	समकालीन हिंदी कविता की संवेदना	–	डॉ0 गोविंद रजनीश
18.	नागार्जुन	–	डॉ0 प्रभाकर माचवे
19.	गीतफरोश	–	भवानी प्रसाद मिश्र
20.	मन एक मैली क़मीज़ है	–	भवानी प्रसाद मिश्र
21.	कवियों के कवि–शमशेर	–	रंजन अर्गणे

पाठ्यक्रम द्वितीय : पाश्चात्य काव्यशास्त्र		
PROGRAMME/CLASS: M.A.	**Year : P.G. 2nd Year or UG in Research Fifth Year**	**SEMESTER: IV/X**
COURSE CODE: 1010102	**COURSE TITLE** पाश्चात्य काव्यशास्त्र	**Theory**
रचना के वैशिष्ट्य और मूल्यबोध के उद्घाटन के लिए पाश्चात्य काव्यशास्त्र का ज्ञान अपरिहार्य है। इससे साहित्यिक समझ विकसित होती है। वह दृष्टि मिलती है, जिसके आधार पर साहित्य के मर्म और मूल्यवत्ता की वास्तविकता परखी जा सके। सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश के साथ रचना का आस्वाद प्राप्त करने, रचना को उसकी समग्रता में समझने और जाँचने-परखने के लिए पाश्चात्य काव्यशास्त्र का अध्ययन समीचीन है।		
CREDITS: 4	**Core Compulsory**	**Max. Marks (Int. + Ext.) 25+75 Total =100 Minimum Marks : 40**
Teaching Hours = Lectures–Tutorials-Practicals (L-T-P) : 4-0-0 (FOUR Hours in a week)		

Unit	Topic	No. of Lectures
I	प्लेटो– काव्य सिद्धांत। अरस्तू– अनुकरण सिद्धांत, विरेचन सिद्धांत, त्रासदी विवेचन।	15
II	आई० ए० रिचर्ड्स– मूल्य सिद्धांत, संप्रेषण सिद्धांत, काव्य भाषा सिद्धांत।	15
III	कॉलरिज– कल्पना और फैंटेसी। क्रोचे– अभिव्यंजनावाद।	15
IV	टी० एस० इलियट–निर्वैयक्तिकता का सिद्धांत। परम्परा की अवधारणा। मार्क्स और फ्रायड का साहित्य चिंतन।	15
V	संरचनावाद, विखंडनवाद, उत्तर आधुनिकतावाद।	15

शिक्षण विधि: व्याख्यान, समूह चर्चा, एसाइनमेंट, ई–कंटेंट इत्यादि।

सतत् आंतरिक मूल्यांकन (25 अंक)–

लिखित परीक्षा (15 अंक) + पाठयेत्तर गतिविधियां (क्विज, असाइनमेंट, पुस्तक समीक्षा, निबंध, रोल प्ले, सेमिनार आदि) (10 अंक)

वाह्य मूल्यांकन (75 अंक)–

निबंधात्मक प्रश्न	3 x 15 = 45
लघु उत्तरीय प्रश्न	2 x 10 = 20
अति लघु उत्तरीय प्रश्न	10 x 1 = 10
कुल योग	= 75

नोटः लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य–असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. व्यावहारिक आलोचना – कृपाशंकर सिंह / जगन सिंह
2. पाश्चात्य साहित्य चिंतन – निर्मला जैन / कुसुम बांठियां
3. हिंदी आलोचना के नए वैचारिक सरोकार – कृष्ण दत्त पालीवाल
4. उत्तर आधुनिक साहित्यिक विमर्श – सुधीश पचौरी
5. पाश्चात्य काव्यशास्त्र – देवेंद्र नाथ शर्मा
6. नई समीक्षा के प्रतिमान – डॉ0 निर्मला जैन
7. पाश्चात्य साहित्यशास्त्र – डॉ0 रामपूजन तिवारी
8. पाश्चात्य समीक्षाशास्त्र : सिद्धांत और परिदृश्य – डॉ0 नगेंद्र
9. आलोचक और आलोचना – बच्चन सिंह
10. आलोचना के बदलते मानदंड और हिंदी साहित्य – डॉ0 शिवकरण सिंह

11. पश्चात्य साहित्य चिंतन – निर्मला जैन/कुसुम बांठियां

12. पाश्चात्य काव्यशास्त्र इतिहास सिद्धांत और वाद – डॉ० भगीरथ मिश्र

13. पाश्चात्य समीक्षाशास्त्र – डॉ० शांतिगोपाल पुरोहित

14. पाश्चात्य काव्यशास्त्र का इतिहास – डॉ० तारकनाथ बाली

15. अरस्तू का काव्यशास्त्र – डॉ० नगेंद्र (संपा)

16. पाश्चात्य काव्यशास्त्र – अशोक के० शाह

17. अरस्तू का त्रासदी विवेचन – डॉ० देवदत्त कौशिक

18. काव्य में उदात्त तत्व – डॉ० नगेंद्र (संपा)

19. रिचर्ड्स के आलोचना सिद्धांत – डॉ० शंभुदत्त झा

पाठ्यक्रम तृतीयः हिंदी आलोचना		
PROGRAMME/CLASS: **M.A.**	**Year : P.G. 2nd Year or UG in Research Fifth Year**	**SEMESTER:** **IV/X**
COURSE CODE: **1010103**	**COURSE TITLE** हिंदी आलोचना	**Theory**
हिंदी साहित्य की कुछ विधाएँ इतनी विकसित हो गयी है कि उनके स्वतंत्र सघन अध्ययन के लिए पृथक वैकल्पिक प्रश्नपत्र की आवश्यकता है। हिंदी आलोचना ऐसी ही एक विधा है। इसका विस्तृत ज्ञान प्राप्त करके विद्यार्थी सफल आलोचक हो सकता है, जो हिंदी पठन–पाठन का मूल प्रयोजन है।		
CREDITS: 4	**Core Compulsory**	**Max. Mars** **(Int. + E4xt.) 25+75** **Total =100** **Minimum Marks 40**
Teaching Hours = Lectures–Tutorials-Practicals (L-T-P) : 4-0-0 (FOUR Hours in a week)		

Unit	Topic	No. of Lectures
I	हिंदी आलोचना का स्वरूप और विकास।	15
II	आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की साहित्यिक मान्यताएँ।	10
III	आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की साहित्यिक मान्यताएँ।	10
IV	डॉ0 रामविलास शर्मा की साहित्यिक मान्यताएँ। आचार्य नंद दुलारे वाजपेयी की साहित्यिक मान्यताएँ।	15
V	द्रुतपाठ– अज्ञेय, नगेंद्र, विजयदेव नारायण साही, मलयज, नंद दुलारे वाजपेयी, महावीर प्रसाद द्विवेदी, गजानन माधव मुक्तिबोध, डॉ0 नामवर सिंह।	10

शिक्षण विधि: व्याख्यान, समूह चर्चा, एसाइनमेंट, ई–कंटेंट इत्यादि।

सतत् आंतरिक मूल्यांकन (25 अंक)–

लिखित परीक्षा (15 अंक) + पाठयेत्तर गतिविधियां (क्विज, असाइनमेंट, पुस्तक समीक्षा, निबंध, रोल प्ले, सेमिनार आदि) (10 अंक)

वाहय मूल्यांकन (75 अंक)–

निबंधात्मक प्रश्न 3 x 15 = 45

लघु उत्तरीय प्रश्न 2 x 10 = 20

अति लघु उत्तरीय प्रश्न 10 x 1 = 10

कुल योग = 75

नोटः लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य--असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. समकालीन हिंदी समीक्षा – हुकमचंद राजपाल
2. हिंदी सैद्धांतिक आलोचना – डॉ0 रूपकिशोर मिश्र
3. आलोचना प्रक्रिया और स्वरूप – डॉ0 आनंद प्रकाश दीक्षित
4. शुक्लोत्तर हिंदी समीक्षा और डॉ0 नगेंद्र – डॉ0 विजय कुमार वेदालंकार
5. हिंदी समीक्षा स्वरूप और संदर्भ – डॉ0 रामदरश मिश्र
6. हिंदी आलोचना के नए वैचारिक सरोकार – कृष्णदत्त पालीवाल
7. हिंदी आलोचना का सैद्धांतिक आधार – कृष्णदत्त पालीवाल
8. नामवर सिंह आलोचना की दूसरी परंपरा – संपादक कमला प्रसाद
9. आलोचना के मान – डॉ0 शिवदान सिंह चौहान
10. कामायनी के अध्ययन की समस्याएं – डॉ0 नगेंद्र
11. साहित्य का इतिहास दर्शन – आचार्य नलिन विलोचन शर्मा
12. महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिंदी नवजागरण – डॉ0 रामविलास शर्मा
13. आलोचना के मान – शिवदान सिंह चौहान
14. आलोचना के सिद्धांत – शिवदान सिंह चौहान
15. हिंदी साहित्य की जनवादी परंपरा – प्रकाश चंद्र गुप्त
16. प्रगतिशील साहित्य के मानदंड – संगेय राघव
17. आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ – नामवर सिंह
18. हिंदी साहित्य की दार्शनिक पृष्ठभूमि – विश्वंभर नाथ उपाध्याय
19. मार्क्सवादी साहित्य चिंतन : इतिहास तथा सिद्धांत – शिव कुमार मिश्रा

20. मानव मूल्य और साहित्य – धर्मवीर भारती
21. नई कविता के प्रतिमान – लक्ष्मीकांत वर्मा
22. हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास – रामस्वरूप चतुर्वेदी
23. साहित्य और साहित्यकार का दायित्व – विजय देव नारायण साही
24. संस्कृति का दार्शनिक विवेचन – देवराज
25. आधुनिकता और हिंदी साहितय – इंद्रनाथ मदान
26. हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास – बच्चन सिंह
27. हिंदी आलोचना बीसवीं शताब्दी – निर्मला जैन
28. आधुनिक हिंदी उपन्यास : सृजन और आलोचना – चंद्रकांत बांदिवडेकर
29. आलोचना की पहली किताब – नंद्र किशोर आचार्य, विष्णु खरे
30. नई कविता का परिप्रेक्ष्य – परमानंद श्रीवास्तव
31. हिंदी आलोचना कुछ कहानियाँ : कुछ विचार – विश्वनाथ त्रिपाठी
32. हिंदी कविता का समकालीन परिदृश्य – हरदयाल
33. आधुनिक हिंदी कविता – विश्वनाथ प्रसाद तिवारी
34. हिंदी आलोचना का विकास – नंद किशोर नवल
35. हिंदी आलोचना : शिखरों का साक्षात्कार – रामचंद्र तिवारी
36. समकालीन हिंदी समीक्षा – हुकमचंद राजपाल
37. हिंदी सैद्धांतिक आलोचना – डॉ0 रूपकिशोर मिश्र
38. आलोचना प्रक्रिया और स्वरूप – डॉ0 आनंद प्रकाश दीक्षित
39. शुक्लोत्तर हिंदी समीक्षा और डॉ0 नगेंद्र – डॉ0 विजय कुमार वेदालंकार
40. हिंदी समीक्षा स्वरूप और संदर्भ – डॉ0 रामदरश मिश्र
41. हिंदी आलोचना के नए वैचारिक सरोकार – कृष्णदत्त पालीवाल
42. हिंदी आलोचना का सैद्धांतिक आधार – कृष्णदत्त पालीवाल
43. नामवर सिंह आलोचना की दूसरी परंपरा – संपादक कमला प्रसाद
44. आलोचना के मान – डॉ0 शिवदान सिंह चौहान
45. कामायनी के अध्ययन की समस्याएं – डॉ0 नगेंद्र

46.	साहित्य का इतिहास दर्शन	–	आचार्य नलिन विलोचन शर्मा
47.	महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिंदी नवजागरण	–	डॉ0 रामविलास शर्मा
48.	आलोचना के मान	–	शिवदान सिंह चौहान
49.	आलोचना के सिद्धांत	–	शिवदान सिंह चौहान
50.	हिंदी साहित्य की जनवादी परंपरा	–	प्रकाश चंद्र गुप्त
51.	प्रगतिशील साहित्य के मानदंड	–	संगेय राघव
52.	आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ	–	नामवर सिंह
53.	हिंदी साहित्य की दार्शनिक पृष्ठभूमि	–	विश्वंभर नाथ उपाध्याय
54.	मार्क्सवादी साहित्य चिंतन : इतिहास तथा सिद्धांत	–	शिव कुमार मिश्रा
55.	मानव मूल्य और साहित्य	–	धर्मवीर भारती
56.	नई कविता के प्रतिमान	–	लक्ष्मीकांत वर्मा
57.	हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास	–	रामस्वरूप चतुर्वेदी
58.	साहित्य और साहित्यकार का दायित्व	–	विजय देव नारायण साही
59.	संस्कृति का दार्शनिक विवेचन	–	देवराज
60.	आधुनिकता और हिंदी साहितय	–	इंद्रनाथ मदान
61.	हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास	–	बच्चन सिंह
62.	हिंदी आलोचना बीसवीं शताब्दी	–	निर्मला जैन
63.	आधुनिक हिंदी उपन्यास : सृजन और आलोचना	–	चंद्रकांत बांदिवडेकर
64.	आलोचना की पहली किताब	–	नंद्र किशोर आचार्य, विष्णु खरे
65.	नई कविता का परिप्रेक्ष्य	–	परमानंद श्रीवास्तव
66.	हिंदी आलोचना कुछ कहानियाँ : कुछ विचार	–	विश्वनाथ त्रिपाठी
67.	हिंदी कविता का समकालीन परिदृश्य	–	हरदयाल
68.	आधुनिक हिंदी कविता	–	विश्वनाथ प्रसाद तिवारी
69.	हिंदी आलोचना का विकास	–	नंद किशोर नवल
70.	हिंदी आलोचना : शिखरों का साक्षात्कार	–	रामचंद्र तिवारी
71.	समकालीन हिंदी समीक्षा	–	हुकमचंद राजपाल

72.	हिंदी सैद्धांतिक आलोचना	–	डॉ0 रूपकिशोर मिश्र
73.	आलोचना प्रक्रिया और स्वरूप	–	डॉ0 आनंद प्रकाश दीक्षित
74.	शुक्लोत्तर हिंदी समीक्षा और डॉ0 नगेंद्र	–	डॉ0 विजय कुमार वेदालंकार
75.	हिंदी समीक्षा स्वरूप और संदर्भ	–	डॉ0 रामदरश मिश्र
76.	हिंदी आलोचना के नए वैचारिक सरोकार	–	कृष्णदत्त पालीवाल
77.	हिंदी आलोचना का सैद्धांतिक आधार	–	कृष्णदत्त पालीवाल
78.	नामवर सिंह आलोचना की दूसरी परंपरा	–	संपादक कमला प्रसाद
79.	आलोचना के मान	–	डॉ0 शिवदान सिंह चौहान
80.	कामायनी के अध्ययन की समस्याएं	–	डॉ0 नगेंद्र
81.	साहित्य का इतिहास दर्शन	–	आचार्य नलिन विलोचन शर्मा
82.	महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिंदी नवजागरण	–	डॉ0 रामविलास शर्मा
83.	आलोचना के मान	–	शिवदान सिंह चौहान
84.	आलोचना के सिद्धांत	–	शिवदान सिंह चौहान
85.	हिंदी साहित्य की जनवादी परंपरा	–	प्रकाश चंद्र गुप्त
86.	प्रगतिशील साहित्य के मानदंड	–	संगेय राघव
87.	आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ	–	नामवर सिंह
88.	हिंदी साहित्य की दार्शनिक पृष्ठभूमि	–	विश्वंभर नाथ उपाध्याय
89.	मार्क्सवादी साहित्य चिंतन : इतिहास तथा सिद्धांत	–	शिव कुमार मिश्रा
90.	मानव मूल्य और साहित्य	–	धर्मवीर भारती
91.	नई कविता के प्रतिमान	–	लक्ष्मीकांत वर्मा
92.	हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास	–	रामस्वरूप चतुर्वेदी
93.	साहित्य और साहित्यकार का दायित्व	–	विजय देव नारायण साही
94.	संस्कृति का दार्शनिक विवेचन	–	देवराज
95.	आधुनिकता और हिंदी साहितय	–	इंद्रनाथ मदान
96.	हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास	–	बच्चन सिंह
97.	हिंदी आलोचना बीसवीं शताब्दी	–	निर्मला जैन

98. आधुनिक हिंदी उपन्यास : सृजन और आलोचना – चंद्रकांत बांदिवडेकर

99. आलोचना की पहली किताब – नंद्र किशोर आचार्य, विष्णु खरे

100. नई कविता का परिप्रेक्ष्य – परमानंद श्रीवास्तव

101. हिंदी आलोचना कुछ कहानियाँ : कुछ विचार – विश्वनाथ त्रिपाठी

102. हिंदी कविता का समकालीन परिदृश्य – हरदयाल

103. आधुनिक हिंदी कविता – विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

104. हिंदी आलोचना का विकास – नंद किशोर नवल

105. हिंदी आलोचना : शिखरों का साक्षात्कार – रामचंद्र तिवारी

106. समकालीन हिंदी समीक्षा – हुकमचंद राजपाल

107. हिंदी सैद्धांतिक आलोचना – डॉ0 रूपकिशोर मिश्र

108. आलोचना प्रक्रिया और स्वरूप – डॉ0 आनंद प्रकाश दीक्षित

109. शुक्लोत्तर हिंदी समीक्षा और डॉ0 नगेंद्र – डॉ0 विजय कुमार वेदालंकार

110. हिंदी समीक्षा स्वरूप और संदर्भ – डॉ0 रामदरश मिश्र

111. हिंदसरोकार – कृष्णदत्त पालीवाल

112. हिंदी आलोचना का सैद्धांतिक आधार – कृष्णदत्त पालीवाल

113. नामवर सिंह आलोचना की दूसरी परंपरा – संपादक कमला प्रसाद

114. आलोचना के मान – डॉ0 शिवदान सिंह चौहान

115. कामायनी के अध्ययन की समस्याएं – डॉ0 नगेंद्र

116. साहित्य का इतिहास दर्शन – आचार्य नलिन विलोचन शर्मा

117. महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिंदी नवजागरण – डॉ0 रामविलास शर्मा

118. आलोचना के मान – शिवदान सिंह चौहान

119. आलोचना के सिद्धांत – शिवदान सिंह चौहान

120. हिंदी साहित्य की जनवादी परंपरा – प्रकाश चंद्र गुप्त

121. प्रगतिशील साहित्य के मानदंड – संगेय राघव

122. आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ – नामवर सिंह

123. हिंदी साहित्य की दार्शनिक पृष्ठभूमि – विश्वंभर नाथ उपाध्याय

124.	मार्क्सवादी साहित्य चिंतन : इतिहास तथा सिद्धांत	–	शिव कुमार मिश्रा
125.	मानव मूल्य और साहित्य	–	धर्मवीर भारती
126.	नई कविता के प्रतिमान	–	लक्ष्मीकांत वर्मा
127.	हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास	–	रामस्वरूप चतुर्वेदी
128.	साहित्य और साहित्यकार का दायित्व	–	विजय देव नारायण साही
129.	संस्कृति का दार्शनिक विवेचन	–	देवराज
130.	आधुनिकता और हिंदी साहितय	–	इंद्रनाथ मदान
131.	हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास	–	बच्चन सिंह
132.	हिंदी आलोचना बीसवीं शताब्दी	–	निर्मला जैन
133.	आधुनिक हिंदी उपन्यास : सृजन और आलोचना	–	चंद्रकांत बांदिवडेकर
134.	आलोचना की पहली किताब	–	नंद्र किशोर आचार्य, विष्णु खरे
135.	नई कविता का परिप्रेक्ष्य	–	परमानंद श्रीवास्तव
136.	हिंदी आलोचना कुछ कहानियाँ : कुछ विचार	–	विश्वनाथ त्रिपाठी
137.	हिंदी कविता का समकालीन परिदृश्य	–	हरदयाल
138.	आधुनिक हिंदी कविता	–	विश्वनाथ प्रसाद तिवारी
139.	हिंदी आलोचना का विकास	–	नंद किशोर नवल
140.	हिंदी आलोचना : शिखरों का साक्षात्कार	–	रामचंद्र तिवारी
141.	समकालीन हिंदी समीक्षा	–	हुकमचंद राजपाल
142.	हिंदी सैद्धांतिक आलोचना	–	डॉ0 रूपकिशोर मिश्र
143.	आलोचना प्रक्रिया और स्वरूप	–	डॉ0 आनंद प्रकाश दीक्षित
144.	शुक्लोत्तर हिंदी समीक्षा और डॉ0 नगेंद्र	–	डॉ0 विजय कुमार वेदालंकार
145.	हिंदी समीक्षा स्वरूप और संदर्भ	–	डॉ0 रामदरश मिश्र
146.	हिंदसरोकार	–	कृष्णदत्त पालीवाल
147.	हिंदी आलोचना का सैद्धांतिक आधार	–	कृष्णदत्त पालीवाल
148.	नामवर सिंह आलोचना की दूसरी परंपरा	–	संपादक कमला प्रसाद
149.	आलोचना के मान	–	डॉ0 शिवदान सिंह चौहान

150. कामायनी के अध्ययन की समस्याएं – डॉ0 नगेंद्र

151. साहित्य का इतिहास दर्शन – आचार्य नलिन विलोचन शर्मा

152. महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिंदी नवजागरण – डॉ0 रामविलास शर्मा

153. आलोचना के मान – शिवदान सिंह चौहान

154. आलोचना के सिद्धांत – शिवदान सिंह चौहान

155. हिंदी साहित्य की जनवादी परंपरा – प्रकाश चंद्र गुप्त

156. प्रगतिशील साहित्य के मानदंड – संगेय राघव

157. आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ – नामवर सिंह

158. हिंदी साहित्य की दार्शनिक पृष्ठभूमि – विश्वंभर नाथ उपाध्याय

159. मार्क्सवादी साहित्य चिंतन : इतिहास तथा सिद्धांत – शिव कुमार मिश्रा

160. मानव मूल्य और साहित्य – धर्मवीर भारती

161. नई कविता के प्रतिमान – लक्ष्मीकांत वर्मा

162. हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास – रामस्वरूप चतुर्वेदी

163. साहित्य और साहित्यकार का दायित्व – विजय देव नारायण साही

164. संस्कृति का दार्शनिक विवेचन – देवराज

165. आधुनिकता और हिंदी साहितय – इंद्रनाथ मदान

166. हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास – बच्चन सिंह

167. हिंदी आलोचना बीसवीं शताब्दी – निर्मला जैन

168. आधुनिक हिंदी उपन्यास : सृजन और आलोचना – चंद्रकांत बांदिवडेकर

169. आलोचना की पहली किताब – नंद्र किशोर आचार्य, विष्णु खरे

170. नई कविता का परिप्रेक्ष्य – परमानंद श्रीवास्तव

171. हिंदी आलोचना कुछ कहानियाँ : कुछ विचार – विश्वनाथ त्रिपाठी

172. हिंदी कविता का समकालीन परिदृश्य – हरदयाल

173. आधुनिक हिंदी कविता – विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

174. हिंदी आलोचना का विकास – नंद किशोर नवल

175. हिंदी आलोचना : शिखरों का साक्षात्कार – रामचंद्र तिवारी

पाठ्यक्रम चतुर्थः (क) कौरवी लोक साहित्य (वैकल्पिक)		
PROGRAMME/CLASS: M.A.	**Year : P.G. 2nd Year or UG in Research Fifth Year**	**SEMESTER: IV/X**
COURSE CODE: 1010104	**COURSE TITLE** (क) कौरवी लोक साहित्य	**Theory**
हिंदी जगत में विद्यमान विभाषाओं में अमूल्य कौरवी साहित्य संपदा विद्यमान है। इसके संकलन, संपादन, सर्वेक्षण व प्रकाशन द्वारा ही अपनी मूल राष्ट्रीय संस्कृति को संरक्षित किया जा सकता है और हिंदी का जनाधार बढ़ाया जा सकता है अस्तु, इसके अध्ययन की उपयोगिता निर्विवाद है।		
CREDITS: 4	**Core Compulsory**	**Max. Marks (Int. + Ext.) 25+75 Total =100 Minimum Marks : 40**
Teaching Hours = Lectures-Tutorials-Practicals (L-T-P) : 4-0-0 (FOUR Hours in a week)		

Unit	Topic	No. of Lectures
I	लोक संस्कृति : अवधारणा, लोकधर्म, लोकनीति तथा लोकमानस, लोक जीवन : लक्षण और विधान।	10
II	लोक साहित्य : अवधारणा, लोक साहित्य के रूप, परिचय व प्रकार– लोकगीत, लोककथाएं, लोकनाट्य (स्वांग), लोकगाथाएं आदि।	10
III	कौरवी बोली : परिचय, क्षेत्र तथा सीमाएं, प्रवृत्तियाँ, तथा उच्चारणगत विशेषताएं, प्रमुख रचनाकार तथा उनकी रचनाएं।	10
IV	पाठ्य ग्रंथ : गामेल्लभास (दोहा–संग्रह) (प्रारंभिक 50 दोहे) डॉ0 कृष्णचंद्र शर्मा, लोकदीप प्रकाशन मेरठ। लोक जीवन के स्वर (गीत–संग्रह) सावन के गीत, टेहले के गीत (प्रारंभिक 25 गीत), धार्मिक गीत (05 गीत) कुरुलोक संस्थान, रामवाटिका, शिवाजी मार्ग, मेरठ।	15
V	सतलड़ा (एकांकी–संग्रह)– कुरुलोक संस्थान, मेरठ। लोग : गिरिराज किशोर, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।	15

शिक्षण विधि: व्याख्यान, समूह चर्चा, एसाइनमेंट, ई–कंटेंट इत्यादि।

सतत् आंतरिक मूल्यांकन (25 अंक)–

लिखित परीक्षा (15 अंक) + पाठयेत्तर गतिविधियां (क्विज, असाइनमेंट, पुस्तक समीक्षा, निबंध, रोल प्ले, सेमिनार आदि) (10 अंक)

वाह्य मूल्यांकन (75 अंक)–

निबंधात्मक प्रश्न	3 x 15 = 45
लघु उत्तरीय प्रश्न	2 x 10 = 20
अति लघु उत्तरीय प्रश्न	10 x 1 = 10
कुल योग	= 75

नोटः लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य–असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

संदर्भ ग्रंथ :–

1.	मयराष्ट्र मानस	–	डॉ0 कृष्ण चंद्र शर्मा (संपादक)
2.	खड़ी बोली की साहित्यिक विधाएं एवं रचनाकार (संदर्भ : मेरठ मंडल)	–	प्रो0 नवीन चंद्र लोहनी
3.	कौरवी लोक साहित्य, भावना प्रकाशन नई दिल्ली	–	प्रो0 नवीन चंद्र लोहनी
4.	लोकवार्ता विज्ञान (भाग 1 व 2)	–	डॉ0 हरद्वारी लाल शर्मा
5.	लोक जीवन के स्वर	–	डॉ0 कृष्णचंद्र शर्मा
6.	लोक साहित्य	–	डॉ0 सुरेश चंद त्यागी (संपादक)
7.	कौरवी शब्द कोश	–	डॉ0 हरद्वारी लाल शर्मा / डॉ0 कृष्णचंद्र शर्मा / डॉ0 चंद्रपाल शर्मा
8.	संत गंगादास और उनका काव्य	–	डॉ0 ब्रजपाल सिंह संत / डॉ0 जगन्नाथ शर्मा 'हंस'
9.	क्रु भारती (बोली अंक)	–	डॉ0 कृष्ण चंद्र शर्मा (संपादक)
10.	कुरु भारती (लोककथा अंक)	–	डॉ0 कृष्ण चंद्र शर्मा (संपादक)
11.	राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन अभिनंदन ग्रंथ	–	
12.	लोक साहित्य	–	सुरेश चंद्र त्यागी (संपादक)

13. लोक साहित्य : स्वरूप और मूल्यांकन – डॉ0 श्रीराम शर्मा

14. लोक साहित्य – बाबू राव देसाई

15. कौरवी लोक साहित्य – डॉ0 सुरेश चंद्र शर्मा, पंकज

16. लोक भाषा – डॉ0 कैलाश चंद्र भाटिया

17. ब्रज लोक साहित्य का अध्ययन – डॉ0 सत्येंद्र

18. लोक साहित्य – इंद्रदेव सिंह

19. लोक साहित्य – डॉ0 इदु यादव

20. लोक साहित्य विज्ञान – डॉ0 सत्येंद्र

21. खड़ी बोली का लोक साहित्य – डॉ0 सत्यागुप्त

22. अवधी लोक साहित्य – डॉ0 सरोजनी रोहतगी

23. कन्नौजी लोक साहित्य – डॉ0 संतराम अनिल

24. हिंदी का प्रादेशिक लोक साहित्यशास्त्र – डॉ0 नंदलाल कल्ला

25. लोक साहित्य और संस्कार संस्कृति – जयनारायण कौशिक

26. लोकगीतों का समाजशास्त्रीय अध्ययन – डॉ0 छोटेलाल बहरदार

27. राजस्थानी लोकनाट्य – डॉ0 सोहनदान चारण

28. लोक साहित्य का शास्त्रीय अनुशीलन – डॉ0 महेश गुप्त

29. लोक संस्कृति और लोक साहित्य – डॉ0 जयनारायण कौशिक

30. कौरवी प्रदेश की लोक संस्कृति – डॉ0 कविता त्यागी

31. खड़ीबोली का लोक साहित्य – डॉ0 सत्या गुप्ता

32. भाषा का लोकपक्ष – डॉ0 रामस्वार्थ ठाकुर

33. लोक संस्कृति के शिखर – सावित्री परमार

34. लोकोक्ति कोश – हरिवंश राय शर्मा

35. उत्तर मध्य क्षेत्र की लोक संस्कृति – जयप्रकाश राय / डॉ0 योगेंद्र प्रताप सिंह

पाठ्यक्रम तृतीय : (ख) प्रवासी हिंदी साहित्य (वैकल्पिक)		
PROGRAMME/CLASS: M.A.	**Year : P.G. 2nd Year or UG in Research Fifth Year**	**SEMESTER: IV/X**
COURSE CODE: 1010105	**COURSE TITLE** (ख) प्रवासी हिंदी साहित्य	**Theory**
CREDITS: 4	**Core Compulsory**	**Max. Marks (Int. + Ext.) 25+75 Total =100 Minimum Marks : 40**
Teaching Hours = Lectures–Tutorials-Practicals (L-T-P) : 4-0-0 (FOUR Hours in a week)		

Unit	Topic	No. of Lectures
I	भारतवंशी समाज, प्रवासी हिंदी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास, प्रवासी हिंदी साहित्य की प्रमुख रचनाएं/ विधाएं। प्रवासी हिंदी साहित्य की विशेषताएं : क्षेत्रीय विशेषताएं, परिभाषा संसर्ग से नई शब्दावली, व्याकरण के नये रूप।	10
II	**उपन्यास** — **उपन्यासकार** लाल पसीना — अभिमन्यु अनंत	15
III	**कवि** — **कविता** ब्रजेंद्र कुमार भगत 'मधुकर (मॉरीशस) — महात्मा गांधी की जय वेद प्रकाश 'वटुक' (अमेरिका) — होली के रंग मोहन राणा (ब्रिटेन) — लंदन कमला प्रसाद मिश्र (फिजी) — क्या मैं परदेसी हूँ मार्तिन हरिदत्त लछमन (सूरीनाम) — वृक्ष की टहनी पर	10
IV	**कहानियां** आस्था (हिमराज सुंदर), अभिशप्त (तेजेन्द्र शर्मा), जड़ों से कटने पर (कृष्ण बिहारी), दिशाएं (रामदेव धुरंधर), घर–वापसी (अर्चना पेन्युली) ।	15
V	द्रुतपाठ– प्रवासी साहित्य अन्य विविध रूप :– नाटक, निबंध, संस्मरण, पत्र–पत्रिकाएं, ई–पत्रिकाएं, तथा सुषमा बेदी, ब्रजेंद्र कुमार भगत मधुकर, डॉ0 कृष्ण कुमार, दिव्या माथुर, अंजना संधीर, जय वर्मा, उमेश ।	10

शिक्षण विधि: व्याख्यान, समूह चर्चा, एसाइनमेंट, ई–कंटेंट इत्यादि।

सतत् आंतरिक मूल्यांकन (25 अंक)–

लिखित परीक्षा (15 अंक) + पाठयेत्तर गतिविधियां (क्विज, असाइनमेंट, पुस्तक समीक्षा, निबंध, रोल प्ले, सेमिनार आदि) (10 अंक)

वाह्य मूल्यांकन (75 अंक)–

निबंधात्मक प्रश्न 3 x 15 = 45

लघु उत्तरीय प्रश्न 2 x 10 = 20

अति लघु उत्तरीय प्रश्न 10 x 1 = 10

कुल योग = 75

नोटः लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य–असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. फिजी में हिंदी का स्वरूप और विकास – विमलेश कांति वर्मा
2. अभिमन्यु अनंत – कमल किशोर गोयनका
3. हिंदी के यूरोपीय विद्वान : व्यक्तित्व और कृतित्व – मुरलीधर श्रीवास्तव
4. मॉरीशस के भारतीयों का इतिहास – के हजारी सिंह
5. विश्व दर्पण : अंतरराष्ट्रीय कविता संग्रह – सं0 बलवंत सिंह नौबत सिंह
6. फिजी में प्रवासी भारतीय – जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी
7. फिजी के राष्ट्रीय कवि कमला प्रसाद मिश्र की कविताएं – सं0 सुरेश ऋतुपर्ण
8. विश्व हिंदी के भगीरथ – डॉ0 भक्त राम शर्मा
9. हिंदी की विश्व यात्रा – डॉ0 सुरेश ऋतुपर्ण
10. ब्रिटेन में हिंदी रचनाकार (ब्रिटेन के बारे में भारत का प्रकाशन) – सं0 राधाकान्त भारती
11. विदेशी विद्वानों का हिंदी प्रेम – जगदीश प्रसाद बरनावाल कुन्द
12. ब्रिटेन में हिंदी – उषा राजे सक्सेना

13.	देह की कीमत : कहानी संग्रह	–	तेजेंद्र शर्मा
14.	जैसे जनम कोई दरवाजा	–	मोहन राणा
15.	मिट्टी की सुगंध	–	सं0 उषा राजे सक्सेना
16.	कहीं क्षितिज कहीं लहरें	–	डॉ0 सतेंद्र श्रीवास्तव
17.	कोई तो सुनेगा : काव्य संग्रह	–	उषा वर्मा
18.	गगनांचल : विश्व हिंदी अंक	–	डॉ0 कन्हैया लाल नंदन
19.	चेतना का आत्मसंघर्ष: हिंदी की इक्कीसवीं सदी हिंदी उत्सव ग्रन्थ: आठवां विश्व हिंदी सम्मेलन, न्यूयॉर्क	–	डॉ0 अंजना संधीर, डॉ0 सुषम बेदी, डा0 पी0 जयरामन
20.	स्मारिका: सातवां विश्व हिंदी सम्मेलन	–	सं0 मंडल: डॉ0 कमल किशोर गोयनका श्रीमती चित्रा मुद्गल, डॉ0 भगवान सिंह, अनुराग चतुर्वेदी
21.	प्रतिनिधि अप्रवासी हिंदी कहानियाँ	–	संपादक हिमांशु जोशी
22.	मॉरीशसीय हिंदी साहित्य	–	मुनीश्वरलाल चिंतामणि
23.`	विदेशों में हिंदी	–	इंद्रदेव भोला
24.	मॉरीशस का हिंदी कथा साहित्य एक सांस्कृतिक अध्ययन	–	डॉ0 कृष्ण कुमार झा
25.	मॉरीशस लोक साहित्य और संस्कृति	–	प्रहलाद रामशरण
26.	भारतीय वांग्मय में मॉरीशस की संस्कृति	–	प्रहलाद रामशरण
27.	मॉरीशस का भोजपुरी साहित्य एवं भारतीय संस्कृति (शोध)	–	डॉ0 उदय नारायण गंगू
28.	विलायत में भारतीय संस्थाएं	–	रमेश वैश्य मुरादाबादी
29.	गंगा से मिसीसिपी तक	–	डॉ0 श्याम नारायण शुक्ल
30.	मॉरीशस में भारतीयों का इतिहास	–	के0 हजारी सिंह
31.	शतदल	–	हरिशंकर आदेश
32.	वैष्विक स्वप्नद्रष्टा तेजेंद्र षर्मा	–	डॉ0 एम0 फिरोज खान

पाठ्यक्रम तृतीय : (ग) प्राचीन भाषा-साहित्य–संस्कृत (वैकल्पिक)			
PROGRAMME/CLASS: M.A.	Year : P.G. 2nd Year or UG in Research Fifth Year		SEMESTER: IV/X
COURSE CODE: 1010106	COURSE TITLE (ग) प्राचीन भाषा-साहित्य–संस्कृत		Theory
CREDITS: 4	Core Compulsory	Max. Marks (Int. + Ext.) 25+75 Total =100 Minimum Marks : 40	
Teaching Hours = Lectures–Tutorials-Practicals (L-T-P) : 4-0-0 (FOR Hours in a week)			

Unit	Topic	No. of Lectures
I	संस्कृत साहित्य का इतिहास (सामान्य परिचय मात्र)	12
II	कुमार संभव – कालिदास (पंचम सर्ग)	12
III	कादंबरी (शूद्रक वर्णन) – बाण विंध्यावटी वर्णन तक अर्थात कथामुख के आरम्भ से पुष्पत्पपि विंध्यावटी नाम तक)	12
IV	मृच्छकटिकम् – शूद्रक (प्रथम अंक)	12
V	पाठ्यग्रंथों से संबंधित संधि और समास पर प्रष्न	12

शिक्षण विधि: व्याख्यान, समूह चर्चा, एसाइनमेंट, ई–कंटेंट इत्यादि।

सतत् आंतरिक मूल्यांकन (25 अंक)–

लिखित परीक्षा (15 अंक) + पाठयेत्तर गतिविधियां (क्विज, असाइनमेंट, पुस्तक समीक्षा, निबंध, रोल प्ले, सेमिनार आदि) (10 अंक)

वाह्य मूल्यांकन (75 अंक)–

निबंधात्मक प्रश्न	3 x 15 = 45
लघु उत्तरीय प्रश्न	2 x 10 = 20
अति लघु उत्तरीय प्रश्न	10 x 1 = 10
कुल योग	= 75

नोटः लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य–असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. संस्कृत साहित्य का इतिहास – ए० वी० कीथ
2. संस्कृत साहित्य का इतिहास – बलदेव उपाध्याय
3. संस्कृत कवि दर्शन – डॉ० भोलाशंकर व्यास
4. हायर संस्कृत ग्रामर (हिंदी अनुवाद) – एन० आर० काले
5. संस्कृत व्याकरण – ह्विटने
6. संस्कृत साहित्य की रूपरेखा – पं० चंद्रशेखर पांडेय/ डा० शांतिकुमार नानूराम व्यास

पाठ्यक्रम तृतीय : (ध) प्राकृत–अपभ्रंश			
PROGRAMME/CLASS: M.A.	**Year : P.G. 2nd Year or UG in Research Fifth Year**		**SEMESTER: IV/X**
COURSE CODE: 1010107	**COURSE TITLE** (ध) प्राकृत–अपभ्रंश		**Theory**
CREDITS: 4	**Core Compulsory**		**Max. Marks (Int. + Ext.) 25+75 Total =100 Minimum Marks : 40**
Teaching Hours = Lectures-Tutorials-Practicals (L-T-P) : 4-0-0 (FOUR Hours in a week)			

Unit	Topic	No. of Lectures
I	प्राकृत तथा अपभ्रंश साहित्य के इतिहास का सामान्य परिचय।	10
II	कर्पूर मंजरी (सम्पूर्ण) – राजशेखर	15
III	पउम चरिउ (प्रथम भाग) – स्वयंभू (बारहवीं व तेरहवी संधिं)	15
IV	प्राकृत विमर्श (वर्ष 1974 संस्करण)– सरयू प्रसाद अग्रवाल प्रकाशन केन्द्र, रेलवे क्रासिंग, सीतापुर रोड, लखनऊ उद्धरण– (1) गाथासप्तशती (3) रावण व हो (5) समराइच्चकहा	15
V	प्राकृत तथा अपभ्रंश शब्दों के रूपों का ज्ञान।	05

शिक्षण विधि: व्याख्यान, समूह चर्चा, एसाइनमेंट, ई–कंटेंट इत्यादि।

सतत् आंतरिक मूल्यांकन (25 अंक)–

लिखित परीक्षा (15 अंक) + पाठयेत्तर गतिविधियां (क्विज, असाइनमेंट, पुस्तक समीक्षा, निबंध, रोल प्ले, सेमिनार आदि) (10 अंक)

वाहृय मूल्यांकन (75 अंक)–

निबंधात्मक प्रश्न 3 x 15 = 45

लघु उत्तरीय प्रश्न 2 x 10 = 20

अति लघु उत्तरीय प्रश्न 10 x 1 = 10

कुल योग = 75

नोटः लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य–असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. अपभ्रंश भाषा का पारिभाषिक कोश – डॉ0 आदित्य प्रचंडिया
2. प्राकृत तथा उसका साहित्य – डॉ0 हरदेव बाहरी
3. अपभ्रंश साहित्य – डॉ0 हरवंश कोछड़
4. प्राकृत–अपभ्रंश साहित्य और उसका हिंदी पर प्रभाव – डॉ0 रामसिंह तोमर
5. तुलनात्मक प्राकृत– पालि–अपभ्रंश व्याकरण – डॉ0 सुकुमार सेन
6. प्राकृत साहित्य का इतिहास – जगदीश चंद्र जैन
7. अपभ्रंश भाषा का अध्ययन – डॉ0 वीरेंद्र श्रीवास्तव
8. हिंदी के विकास में अपभ्रंश का योग -- डॉ0 नामवर सिंह
9. पुरानी हिंदी – चंद्रधर शर्मा गुलेरी
10. हिंदी साहित्य का आदिकाल -- हजारी प्रसाद द्विवेदी
11. अपभ्रंश पीठिका – डॉ0 सुमन राजे
12. प्राकृत हिंदी शब्दकोश – उदय चन्द जैन
13. प्राकृत भाषाओं का व्याकरण – हेमचंद्र जोशी (अनु0)